Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 1

घटासं

मोही नैय्यर

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 2

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 3

समर्पण

पहली सांस से लेकर हरेक़ उस सांस को जिसने इन्सान की चाह, दर्द, तड़प, क़राह और आह बनकर इन्सान होने का एहसास कराया.

राह की हरेक़ उस ठोकर को जिसने संभल कर चलना सिखाया और सपनों की उड़ती हुई उस ग़र्द को जिसने दूसरों के सपने साकार करने की प्रेरणा दी.

दिल की हरेक़ उस धड़कन को जिसने तिरस्कार को प्यार और प्यार को पूजा बना दिया. आंख से टपके हरेक़ उस आंसू को जिसने मन के मैल को धो दिया या औरों के दर्द का एहसास दिलाया.

अपनों और गैरों के हरेक़ उसे संपर्क को जिसने खुदी को बेखुदी में बदल दिया. हरेक़ उस तन्हाई को जिसने ग़म और तड़प की क़राहटों को ख़ामोश अपने आंचल में समेट लिया. हरेक़ उस ख़ामोशी को जो कुछ न कहकर भी बहुत कुछ कह गई.

इन्सान की उस चाह को जो अनजान रह गई. जाने या अनजाने में हुए हरेक़ उस पाप को जो पश्चाताप की आग में झुलसा गया. बस्ती से श्मशान जाने वाले हरेक़ उस रुदन को जो रुला गया और कह गया... तुम बस एक इन्सान हो.

मोही नैय्यर

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 4

आभार

डॉ. कुंवर चन्द्र प्रकाश सिंह जी ने इस संग्रह के लिए प्राक्कथन लिखकर जो सम्मान मुझे और मेरी भावनाओं को दिया, उसके लिए मैं उनका अत्यंत आभार मानता हूं.

रुबाईयों की आत्मा को चित्रित करने के कठिन कार्य को जिस सरलता से श्री सेवा राम जी ने कर दिखाया उसके लिए मेरे साथ पाठकगण भी आभार मानेंगे.

जालंधर, दिल्ली, शिमला, दौराला, मेरठ, रुड़की और आगरा के निम्नलिखित विद्यालयों और उनके अध्यापकों के प्रति नत मस्तक आभार प्रकट करते हुए मैं स्वयं को भाग्यशाली समझता हूं कि आज इस योग्य बन पाया.

- देवी सहाय सनातन धर्म हाई स्कूल, जालंधर, पंजाब, भारत
- श्री रामरुप विद्या मंदिर, कमला नगर, दिल्ली, भारत
- डी.ए.वी. हाईस्कूल, शिमला, हिमाचल, भारत
- सर श्रीराम हायर सैकेन्ड्री स्कूल, दौराला, मेरठ, उत्तरप्रदेश, भारत
- देवनागरी इन्टरमीडिएट कालिज, मेरठ, उत्तरप्रदेश, भारत
- देवनागरी डिग्री कालिज, मेरठ, उत्तरप्रदेश, भारत
- रुड़की विश्वविद्यालय, रुड़की, उत्तरप्रदेश, भारत
- आगरा विश्वविद्यालय, आगरा, उत्तरप्रदेश, भारत

अन्त में उस परमपिता प्रभु का कोटिशः बार आभार मानता हूं जिसने मानव जीवन प्रदान किया और ऐसे परिवार का सदस्य बनाया जिसमें एक दूसरे के लिए बलिदान की परम्परा की ज्वाला को मन, वचन और कर्म से प्रज्जवलित रखा जाता है.

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 5

Virat Hindu Samaj
Ramayana Vidya Peeth, 15-Institutional Area, Lodhi Road, New Delhi-110003.
President : Dated 23.7.1983
Dr. Karan Singh
M.P.

दो शब्द

श्री मोही नैय्यर की कृति ''घटाएँ'' देखकर स्वाभाविक प्रसन्नता हुई. विदेश में रहकर अपनी राष्ट्रभाषा के प्रति अनन्य प्रेम के साथ ही ''घटाएं'' की कविताओं में कवि का संवेदनशील हृदय भाषा को पीछे छोड़कर अनुभूतियों को आगे बढ़ा देता है. स्वयं कवि ने समर्पण में इस तथ्य को स्वीकार किया है कि तिरस्कार को प्यार और प्यार को पूजा बनाने की क्षमता ने ही उन्हें प्रेरणा दी है. मोही जी ने कविताओं के साथ ही रेखाचित्रों का सहारा लिया है जो इस कृति को संग्रहणीय बना देता है.

पिछले दिनों अमेरिका यात्रा में ''अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति'' द्वारा आयोजित सूरदास जयंती समारोह में भाग लेने का अवसर मिला तथा उसी दौरान भारत के अनेक ऐसे साहित्यकारों, कलाकारों और हिन्दी प्रेमियों से भेंट हुई जो देश से उतनी दूर रहते हुए भी भारत को सदा अपने दिल से लगाए हुए हैं. ''घटाएँ'' के कवि भी उनमें से एक हैं.

मैं कवि के प्रति इस समर्पित काव्य पुस्तक के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ और विश्वास करता हूँ कि पाठकों का प्यार कवि और कृति को मिलेगा.

कर्ण सिंह

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 6

बाज़ारों से निकलते हुए बचपन की गांव की कमसिन की याद आई. समाधिस्थ वृक्षों के जंगल में अचानक कोई अपना सा मिल गया भटकते हुए.

वीरानी के रेगिस्तान में जाने कहां से पुरवाई बही, सावन की भूली हुई फुहार ले आई.

वे बरसीं, वे गरजीं, वे छाया की तरह तपन में साथ रहीं.

मोही नैय्यर की ''घटाएँ'' स्वनिष्कासित मुझ यक्ष के लिए देश का शुभ संदेश थीं.

उन्हें पढ़कर बार-बार जिया मैंने अपना गांव, अपना किशोर जीवन और स्वदेश.

बार-बार कामना की है वे जियें, जीवन को और अर्थ देने के लिए और हमें काव्य का रसास्वादन कराने को.

बनवास में भटकती हुई रुहों में हमें मिलते हैं
अपने चमन की कलमों के कुछ फूल यहां खिलते हैं
कुछ भीनी भीनी खुशबू है पुरवा वस्ल-बहारों की
वीरानी के ख़ारों से जो फटते हैं दिल सिलते हैं

मरुभू की तपन में मिली है नीम की छाया
सूखे में खेत पर कहीं बादल उभर आया
भटके हुए हर राम को हनुमान का मिलन
परदेस में खोया हुआ निज गांव है पाया

- वेदप्रकाश 'वटुक'

बरकले, कैलीफोर्निया
यूएसए

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 7

वाह! स्निग्ध घटाएँ

घटाएं-कवि के लिए प्रेरणाप्रद होती हैं. अपने हृदय की भावनाओं को घटाओं के सहारे कवि (शायर) श्री मोही नैय्यर ने रसिक पाठकों के हृदय में उड़ेल दिया है. यह तो परम्परागत सत्य है कि वेदना के गीत बड़े मधुर होते हैं.

'Our sweetest songs are those
That tell of saddest thoughts.'

नैय्यर जी की रुबाइयों की ख़ासियत यह है कि वह उनकी कलम से नहीं, सीधे हृदय से फूट निकली नज़र आ रही हैं. उनकी शायरी का रस लेते हुए हमें कवि कीट्स की उक्ति बार-बार याद आती रही. उनका कहना है कि कविता वह होती है, जो पेड़ों से पत्तों की तरह स्वाभाविक रुप में फूट निकले. नैय्यर जी की शायरी में ऐसी नैसर्गिकता है.

एक बानगी तो देख लीजिए ः-

दूर कहीं झूम के जो उठते हैं बादल
लगते हैं कुदरत की आंख का काजल
इन्तज़ारे-वस्ल में कहीं रोता है कोई, तो
बज उठती है कहीं मोर के पांव की पायल

नैय्यर जी के दिल से कविता की, शायरी की ऐसी रससिक्त बूंदें हमेशा निकलती रहें.यह हम दोनों की शुभकामना है.

- डॉ. पी जयरामन
- तुलसी जयरामन

5 जुलाई 83

Bhartyia Vidya Bhawan
65-09 Queens Boulevard
North Side
New York 11377
NY, USA

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 8

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 9

क्रम

- घटाएं
- प्राक्कथन
- झलक
- महफ़िल-ए-इश्क़
- शराबे-गम
- कलम के आंसू
- जो अपने हैं
- वतन
- ज़िन्दगी के जाम में उठते गुबार

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 10

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 11

घटाएं

रुबाईयों का यह संग्रह पेश करते हुए मैं न तो शायर और न ही कोई कवि होने का दावा कर सकता हूं. हां एक इंसान बनने की कोशिश में कुछ खून की बूंदें ग़म और तड़प की गर्मी से तप कर दिल के वीरान आसमां में घटाएं बनकर बिखर गईं. अश्कों की नमी से तर कुछ घटाएं, कलम के होठों से कागज़ की ज़मीं पर उतर आईं.

इस बात का एहसास होते हुए कि यह ज़िन्दगी मेरी अपनी नहीं या कि सिर्फ़ मेरे लिए नहीं, यह औरों के लिए दी हुई खुदा की नेहमत है, यही सोचकर कि जो मैंने इस ज़िन्दगी से पाया जहां तक हो सके औरों की नज़र कर दूं, इसी ख्याल से ये रुबाईयां आपकी नज़र करता हूं.

शायद आप के दिल में ख्याल आये कि इस संग्रह का नाम 'घटाएं' क्यों? आसमानों में तैरती घटाएं कई तरह की होती हैं. कुछ घटाएं काली होती हैं, कुछ उजियाली, और कुद धुंधियाली. कभी सावन की काली घटा को देखकर दिल तड़प उठाता है तो कभी महक जाता है. फर्क़ सिर्फ दिल के विरही होने या मिलन के आग़ोश में होने का है. कभी नीले आसमानों में टहलती उजियाली घटाएं मन को भा जाती हैं. उनका आवारापन और उजियाला बदन इश्क़ में क़ैद दिल को तड़पा जाता है. धुंधियाली घटाएं अक्सर इन्सान की ज़िन्दगी का दर्पण बन बेबसी, बेक़रारी, मायूसी और पशेमानी का अक़्स पेश करती हैं. और कभी कामयाब इन्सां धुंधियाली घटा को देखकर 'हूं' कह और सर उठा रोशनी की तरफ़ बढ़ जाता है. धुंधियाली घटा के न होने का एहसास दिलाता है. मेरी ये रुबाईयां भी इन काली, उजियाली और धुंधियाली घटाओं की तरह हैं. इनमें से शायद कोई आपके दिल को तड़पा जाये, महका जाये, कसका जाये या बेअसर जाये.

कुछ घटाएं बरसती हैं तो कुछ गरजती हैं. कुछ बरसती हैं और गरजती भी हैं. कुछ बिना बरसे, बिना गरजे एक छोर से दूसरे छोर तक खामोश टहलती हुई बेसबब ज़िन्दगी का उन्वान बन जाती हैं. कुछ घटाएं, फुहार लाती हैं तो कुछ सैलाब. कुछ घटाएं बिना बरसे सहरा में झुलसते राही के लिए साया बन ठंडक का सबब बन जाती हैं. कुछ घटाएं बर्क़ बन के आशियां जला देती हैं तो कुछ बर्क़ बनके गफ़लत की नींद से जगा देती हैं. मेरी ये रुबाईयां भी इन्हीं घटाओं की तरह हैं. इनमें से शायद कोई फुहार बन रुह और जिस्म को छू ले, कोई लफ़्ज़ों के लिबास में 'जो गरजते हैं बरसते नहीं' बादलों की तरह बेमानी निकलें, कोई दिल की दुनिया में सोये जज़बातों को अश्कों का सैलाब बना दें, कोई आरजूओं के सहारा में ठंडी आह बन दिल को सहला दे और हो सकता है कि कोई बर्क़ बनके फ़िराक और वस्ल की दुनिया में आग लगा दे.

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 12

कुछ घटाएं छोटी होती हैं, कुछ बड़ी और कुछ आसमानों में पूरी तरह छा जाती हैं और कभी-कभी घटाएं ज़मीं को भी छू लेती हैं. मेरी ये रुबाईयां भी इन्हीं घटाओं की तरह हैं. इनमें से शायद कुछ आपके जज़बातों को सर से पा तक छू जायें तो हो सकता है कि कुछ अनछुए बादल या घटा की तरह यूं ही आपकी नज़रों के सामने भटक जायें.

मेरी ये रुबाईयां इन्हीं घटाओं की तरह आपको जैसी भी लगे मुझे लिख भेजें. मैं आपके बयां का तहे-दिल से शुक्र-गुज़ार हूंगा.

मोही नैय्यर

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 13

प्राक्कथन

अमेरिका के रससिद्ध कवि श्री मोही नैय्यर की रुबाईयों के संग्रह ''घटाएं'' को हिन्दी साहित्य के सहृदयों और रसीकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं स्वयं भाव-विभोर हो रहा हूं. कवि मोही जी ने ''घटाएं'' के संबंध में आरंभ में जो वक्तव्य दिया है वह बड़ा मर्मस्पर्शी है. इसमें इस संग्रह के नामकरण की सार्थकता बड़ी भावात्मक शैली में प्रतिपादित की गई है. जो उतनी ही युक्ति-युक्त है. कवि हृदय का धनी होता है, बुद्धि उसका अनुसरण करती हुई संवेदना की दीक्षा पाती है. कवि का हृदय विश्व की वेदना और संवेदना का तापमापक यंत्र होता है. कवि का आविर्भाव न हुआ होता तो संसार में एक मनुष्य दूसरे की पीड़ा का अनुभव कैसे कर पाता. एक व्यक्ति की सुखानुभूति दूसरे की रसानुभूति कैसे बनती. चन्द्रिका का सौंदर्य दान, फूलों की मुस्कान, चन्द्रमा को पाने के लिए समुद्र की उत्ताल तरंगों का उर्ध्यबाहु नर्त्तन कौन देखता. बसंत समीर को आमंत्रण देने वाली शस्यश्यामल स्वयं दूतिका वसुंधरा के मन का रहस्य कौन जान पाता. क्षितिज को छूने के लिए अपना आंचल उड़ाती हुई वनराजि का अभिसार कौन देखता? और कौन देखता अपने अंतस में छिपाये हुये विधुद्धांम की तड़पती शोभा धारण करने वाली घनों की उन घटाओं को जो सरिसर, सागर, मरुभूमि, शादूल एवं शस्यभरित क्षेत्रसमूह को समान भाव से अपने हृदय में संचित रसराशि को निःर्सग भाव से वितरण करती है? ''घटाएं'' वितरण करती हैं अपना सर्वस्व परहित के लिए, इसलिए उनका नाम है ''पार्जन्य'' अर्थात जो दूसरे के लिए जीता है जिसने जन्म ही परहित के लिए पाया है. कालिदास के विरही यक्ष ने इसीलिए अपनी प्रिया के पास मेघ को संदेशवाहक बना कर भेजा था. आषाढ़ की प्रथम घनघटा से अधिक विरही यक्ष की व्यथा और कौन समझ सकता है? हिन्दी के प्रसिद्ध कवि घनानंद को भी घन की घटा ही सर्वश्रेष्ठ संदेश ले जाने वलाी प्रतीत हुई थी. तभी उन्होंने कहा था ''परजन्य यथारथ है बरसौं और कबहूं न बिसासी सुजान के आगन में अंसुवन को बरसो.''

''घटाएँ'' पढ़ते हुए कालिदास के विरही यक्ष की व्यथा साकार हो उठी, और सामने आ गये ''सुजान'' के विरह में तड़पते ''घनानंद'' और याद आ गये सूरदास 'पिया बिनु सीपिनि कारी राति' घटाएं की रचनाओं ने मुझे अभिभूत कर लिया. मुझे लगा इस संग्रह ''घटाएं' का कवि बहुविध हृदय द्रावक संवेदनाओं का घटाटोप है. उसका व्यक्तित्व ही काली, उजियाली, धुंधियाली, गरजती, बरसती, तड़फती, झड़पती, कभी फुहार बन कर सरसतीं और कभी मूसलाधार बरसती घटाओं का समवाय है. कवि मोही प्रमुखतः वेदना के कवि है किन्तु उनकी वेदना अनेक पक्षीय है, उसके अनेक आयाम है. ''झलक'' खंड में संकलित रुबाईयों में कवि विश्व-वेदना को अपनाता दिखाई पड़ता है. वह अपनी कब्र पर यह लिखा देखना चाहता है कि ''जिया यह

इन्सां तो सिर्फ़ औरों के लिए'' वह यह भी कहता है कि मेरा निवास ही वहां जहां जन-जीवन में व्यथा व्याप्त है- ''मैं तुम्हारे गम के करीब रहता हूं'' कवि की अनुभूतियां बड़ी उदात्त है वह औरों के लिए जीने वाला इन्सान बनना चाहता है और जीवन के पथ पर चिराग बनकर जलना चाहता है. यह एक भिन्न स्वस्थ स्वर है. जो सामान्यतः रुबाईयों में कम सुनाई पड़ता है.

रुबाई फारसी का छंद विशेष है. हिन्दी छंद शास्त्र की दृष्टि से इसका मूल वजन १ तगण, १ यगण, १ सगण और १ भगण है. इसके पहले-दूसरे और चौथे पद में काफ़िया होता है. कभी-कभी चारों पद चरण भी सानुप्रास हो जाते हैं. अच्छा यह माना जाता है तृतीय पद सानुप्रास न हो. वैसे इसमें चार समवृत्त चरण होते हैं. परंपरा यह थी कि गज़ल कसीदा के प्रथम चार चरण रुबाई के रखे जाते थे. विशेष छंद हजाज का भी प्रयोग होता था. तराना इसकी विशेषता थी. उमरखैयाम अमेरिका, इंगलैंड आदि में अपनी रुबाईयों के कारण बहुत प्रसिद्ध हुए, फिट्जगैराल्ड के अनुवाद को इसका विशेष श्रेय है. बच्चन ने उमरखैयाम की 'मधुशाला' का अनुवाद कर इस छन्द को हिन्दी में लोकप्रिय बनाया. राष्ट कवि मैथलीशरण गुप्त ने भी इन रुबाईयों का श्रेष्ठ अनुवाद किया. उर्दू कवि रुबाईयों के माध्यम से नैतिक तत्वों का भी कथन करते हैं. उर्दू के रुबाईकारों में अनीस, दबीर, इक़बाल, जगत मोहन रवाँ, जोश आदि विशेष प्रसिद्ध हैं. हिन्दी में आजकल कुछ लोग इसे मुक्तक भी कहने लगे हैं जिनमें सूक्ति और उक्ति वैचित्रय की प्रधानता रहती है.

उक्त परंपरा के परिप्रेक्ष्य में मोही जी ने रुबाईयों के बीच श्रेष्ठ स्थान अधिगत कर लिया है. समसामायिक साहित्यकारों में स्वर्गीय चंद्रिका सिंह 'करुणेश' ने रुबाई लेखकों में बड़ा गौरवशाली स्थान बना लिया है. उनकी 'आंसू की एक बूंद' करुण रस की अविस्मरणीय कृति है. मोही जी में और करुणोश जी में कई दृष्टियों से साम्य है. दोनों ही वेदना के सिद्ध कवि हैं, दोनों की रचनाओं ने हिन्दी और उर्दू के कृत्रिम भेद की दीवार ढहा दी है. दोनों को विरोधाभास पूर्ण उक्तियों के द्वारा प्रेम की अनिर्वचनीयता को वयक्त करने की कला पर अदभुत अधिकार है. दोनों ही, कवि मानवतावादी हैं और दोनों में मानव जाति में व्याप्त वैषम्य, वेदना, शोषण, प्रताड़न को दूर करने की उद्दाम आकांक्षा है. काश ये समान धर्मी कवि कभी मिले होते.

''शराबे गम'' खंड की कवितायें विशेष रुप से करुणोश की रुबाईयों की याद दिलाती हैं. मोही जी की यह रुबाईयां जितनी मौलिक हैं, उतनी ही मोहक भी. यह कथन बाल्मिकी के 'शोक श्लोकत्वभागत!' का स्मरण कराता है.

''जो अपने हैं'' खंड में अनेक प्रकार की अर्न्तवृतियों के अंतर्द्वदं का चित्रण है. ये सभी रुबाईयां अनेक प्रकार के दर्दों की दास्तान कहती हैं. और दिल में घर कर लेती हैं. इनका प्रमुख स्वर है- 'मुझे गैर न समझो''. गैरों को अपनाने की कला में कवि मोही माहिर है.

''महफिल-ए-इश्क़'' खंड इस संग्रह का सबसे बड़ा अंश है. प्रतीत होता है इसमें कवि की स्वीकारोक्तियों का संकलन है. प्रेमानुभूतियों की स्वीकृति और अभिव्यक्ति का काव्यगत मूल्य बहुत अधिक है. पर इन स्वीकारोक्तियों को काव्य कला के उच्च उदात स्तर पर प्रतिष्ठा करने के लिए उनके वैयक्तिक सीमाओं के घेरे तोड़ कर उनहें निर्वैयक्तिक स्वरुप देना पड़ता है तभी उनका साधारणीकरण होता है, व्यक्ति की व्यथा का अनुभव तभी सबको सामान रुप से हो पाता है. फिर भी इस खंड की कुछ रुबाईयां बड़ी मर्मस्पर्शी हैं.

- ''यारब छलक जाते हैं जाम उनकी आंखों के
  वो जब भी जो मेरे दिल का हाल जानते हैं''
- ''तुझको भी रुलायेंगे मेरी याद के बादल''
- ''बज उठती है कहीं मोर के पांव की पायल''

प्रायः इन प्रेमानुभूतियों में फारसी शैली के काव्य का प्रभाव लक्षित होता है. वेदना की उद्दाम तीव्रता को व्यक्त करने के लिए ऐसे प्रतीकों का चयन किया गया है जो भारतीय काव्य-परंपरा में सहज स्वीकृत नहीं हैं. अच्छा होता यह उद्दाम प्रेमानुभूति भारतीय प्रतीकों के माध्यम से निशित और निविड़ बनकर अभिव्यक्त होती.

'ताजमहल' पर लिखी सब रुबाईयां सरस हैं. पंडित जवाहरलाल नेहरु पर लिखी गईं रुबाईयां कवि के राष्ट्रप्रेम का प्रतीक हैं. लाल बहादुर शास्त्री पर लिखी गईं रचनायें अधिक मार्मिक हैं. कवि ने ठीक लिखा है - ''जैसे सर ज़मीन से आसमां चला गया''. कुछ कविताएं चीन के आक्रमणकारियों के प्रति राष्ट्र का तीव्र आक्रोश व्यक्त करती हैं.

संग्रह का अंतिम खंड ''जिन्दगी के जाम में उठते गुबार'' संभवतः इसका सबसे मार्मिक अंशों में है. इसमें कवि की अनेक नैतिकता प्रेरक सूक्तियां संकलित हैं.

- ''हिम्मत के हाथों बिगड़ती तक़दीरें बन जाती हैं''
- ''ज़िदगी का मक़सद उसूलों को आज़माना है''
- ''राहें-ज़ीस्त में मंजिलें मिलती हैं उन्हें
  जो किनारों को तोड़ सैलाब से बढ़ जाते हैं''
- ''गरज़ के जहन्नुम में खो जायेगी यह दुनिया''
- ''तो ज़िंदगी राहे-इंसां पे चिराग बन गई''

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 16

कुल मिलाकर ''घटाएं'' अमेरिका के एक युवक कवि की अभिनंदनीय कृति है. इसकी भावशवलता रमणीय है और रसनीय है. भाषा पर कवि को अधिकार है. वह उर्दूपन की बेगानियत की दीवार हटाकर यह सिद्ध कर सका है कि हिन्दी और उर्दू दोनों एक हैं. अभिन्न हैं. रुबाई की शिल्प साधना में कवि को अपेक्षित सफलता मिली है. ''घटाएं' मोही की चिरस्मरणीय कृति है. मुझे विश्वास है, विश्वव्यापी हिन्दी जगत में इसका स्वागत होगा और मोही नैय्यर भविष्य में अपनी कृतियों से अक्षय यश प्राप्त करेंगे. मैं इस कृति का पुर्नवार अभिनंदन करता हूँ.

डॉ. कुंवर चन्द्र प्रकाश सिहं

लखनऊ

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 1

झलक

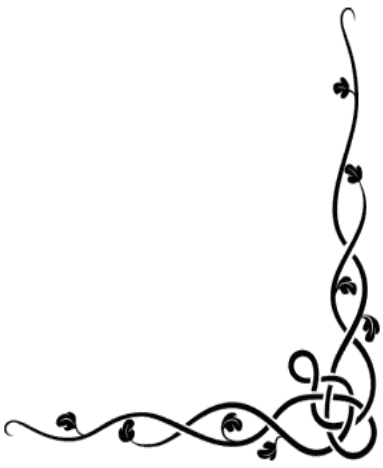

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 2

छाई यह घटा तो सिर्फ़ मोरों के लिए
खिला यह गुल[1] तो सिर्फ़ भौरों के लिए
बाद मरने के मेरी क़ब्र पे लिख देना
जिया यह इंसां तो सिर्फ़ औरों के लिए

राह की गर्द से प्यार करता हूँ
आहे-सर्द[2] से प्यार करता हूँ
कहीं इन्सां से हैवां न बन जांऊ
इसलिए दर्द से प्यार करता हूँ

1. फूल 2. ठंडी आहें

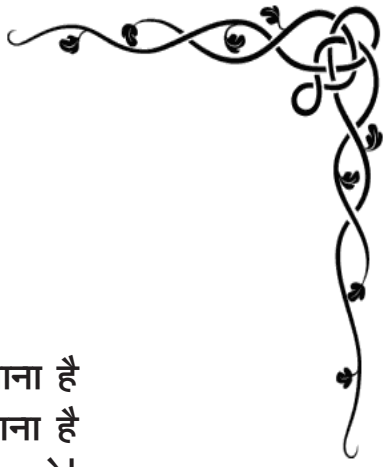

ज़िन्दगी क्या है? मयख़ाना है
सांस क्या है? दौरे-पैमाना है
संभल के पियो ए पीने वालो!
दौरे-पैमां का टूटना मर जाना है

रोती हुई शबनम को हबीब[1] कहता हूँ
दीदा-ए-नम[2] को अपना नसीब कहता हूँ
खुशी की बस्ती में मुझे ढूंढने वालो!
मैं तुम्हारे ग़म के करीब रहता हूँ

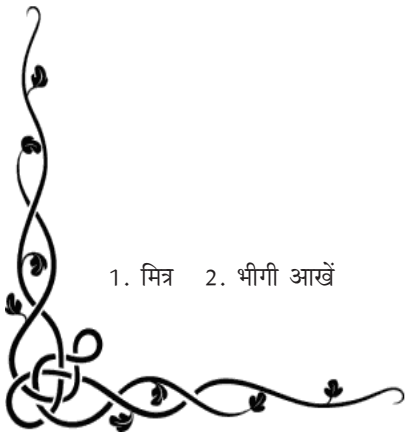
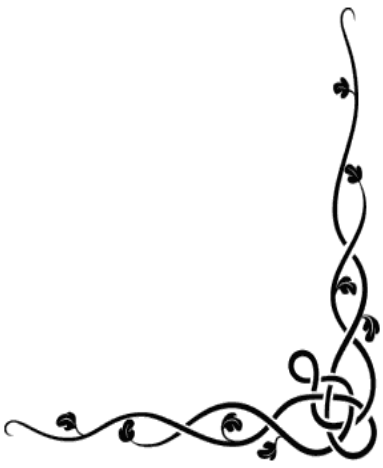

1. मित्र 2. भीगी आखें

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 4

जियें तो सारे जहां के लिये
मरें तो दर्दे-ज़मां[1] के लिये
खुलें जो लब तो कोई गिला न हो
उठें जो हाथ तो सिर्फ़ दुआ के लिए

जो दिये हैं तू ने वो अरमान मिटा दे
हसरतों की बस्ती को शमशान बना दे
ऐ औरों के खुदा! बस ये ही तमन्ना है
जिये जो औरों के लिये वो इन्सान बना दे

1. ज़माने का दर्द

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 5

ज़िन्दा रहे पर ज़िन्दगी से अनजाने रहे
ग़म हमारा और हम ग़म के दीवाने रहे
मय-ए-दर्द[1] में डूब गई जवानी मेरी
नज़र के सामने खुशी के पैमाने रहे

दुनिया तेरे दामन में पला हूँ
मगर तुझको हमेशा ही खला हूँ
बेख़बर! तेरी खुशियों की खातिर
मैं दर्द के सांचे में ढला हूँ

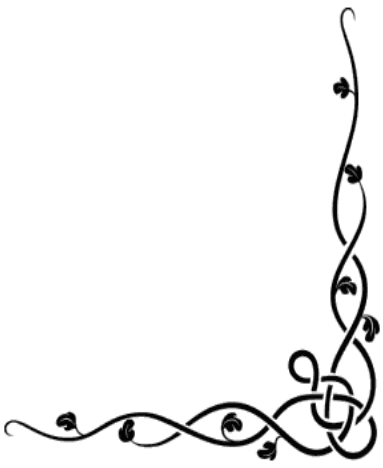

1. पीड़ा की शराब

खिज़ा को ही बहार कहते हैं
बेक़रारी को क़रार कहते हैं
ज़िन्दगी कुछ ऐसे कटी है ए दोस्त!
नफरत को ही प्यार कहते हैं

हम हैं कि हर मुश्किल से टकरा के चलते हैं
काफ़िर[1] हैं वो जो दामन बचा के चलते हैं
तेरी याद आती है तो रो लेते हैं तन्हाई में
वरना तो हर कदम पे मुस्करा के चलते हैं

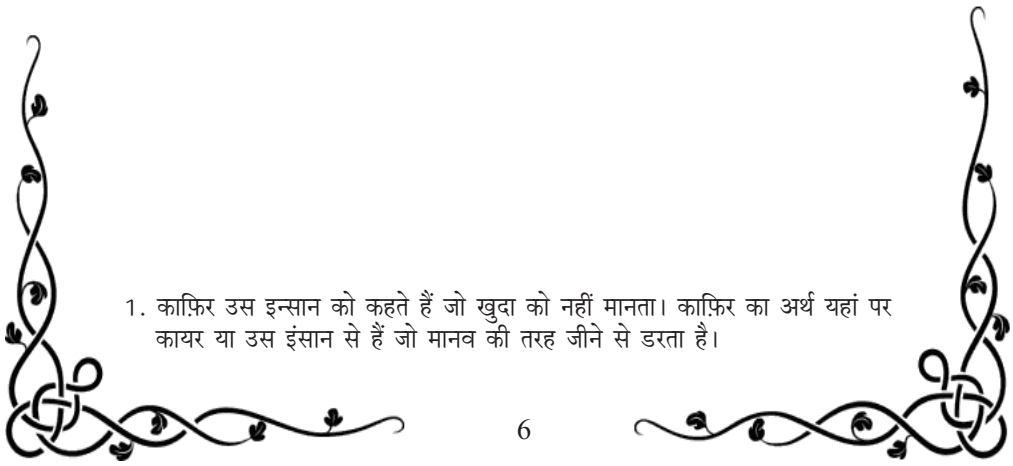

1. काफ़िर उस इन्सान को कहते हैं जो खुदा को नहीं मानता। काफ़िर का अर्थ यहां पर कायर या उस इंसान से हैं जो मानव की तरह जीने से डरता है।

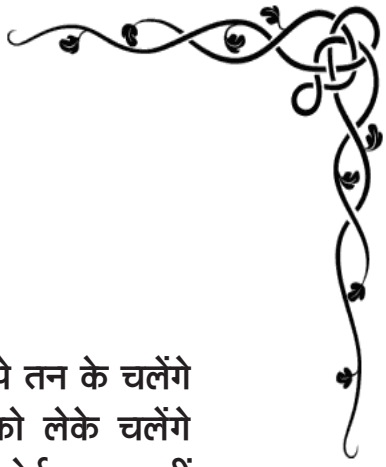

जज़बातों को दफ़ना के, ऊसूलों पे तन के चलेंगे
ज़माने के साथ नहीं, ज़माने को लेके चलेंगे
गर अपनी राह अंधेरी है तो कोई बात नहीं
औरों की रह-गुज़र पे चिराग बन के जलेंगे

बेबसी, बेक़रारी, मायूसी को उम्मीदे-कफ़न में सी लेता हूँ
अफ़सानों के कंधों पे देख हक़ीक़त का जनाज़ा लबों को सी लेता हूँ
यूं तो खुदी[1] और खुदक़शी[2] के लाख बहाने हैं जहां में मय्यसर[3]
यह ज़िन्दगी औरों की अमानत है बस यही सोच के जी लेता हूँ

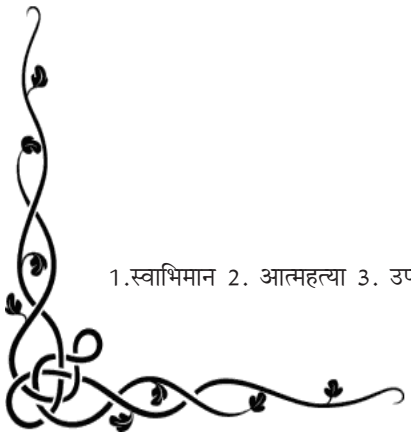
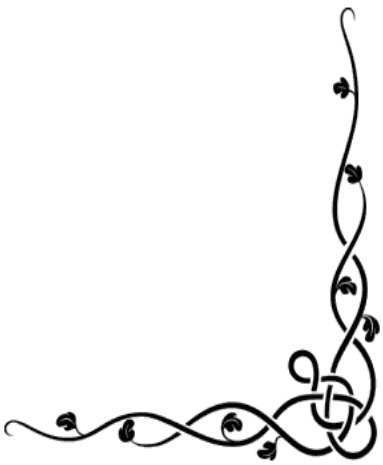

1.स्वाभिमान 2. आत्महत्या 3. उपलब्ध

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 8

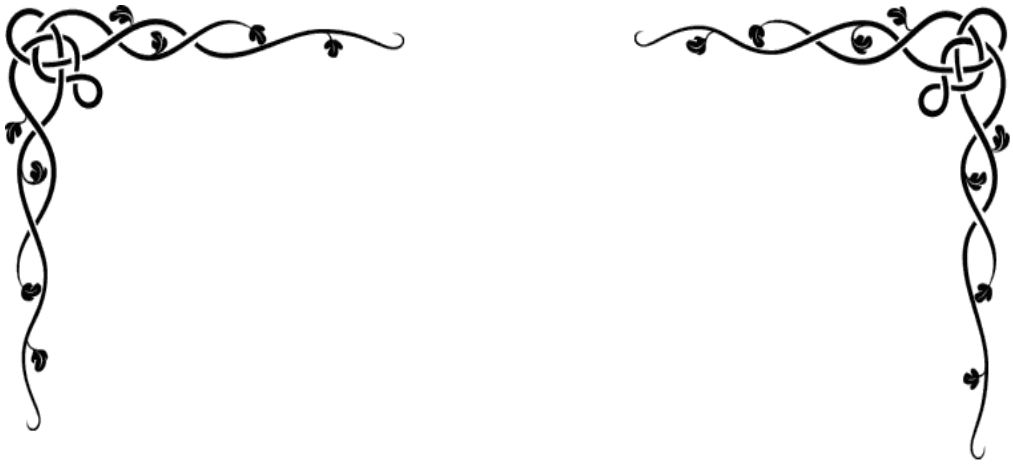

घटनाएं

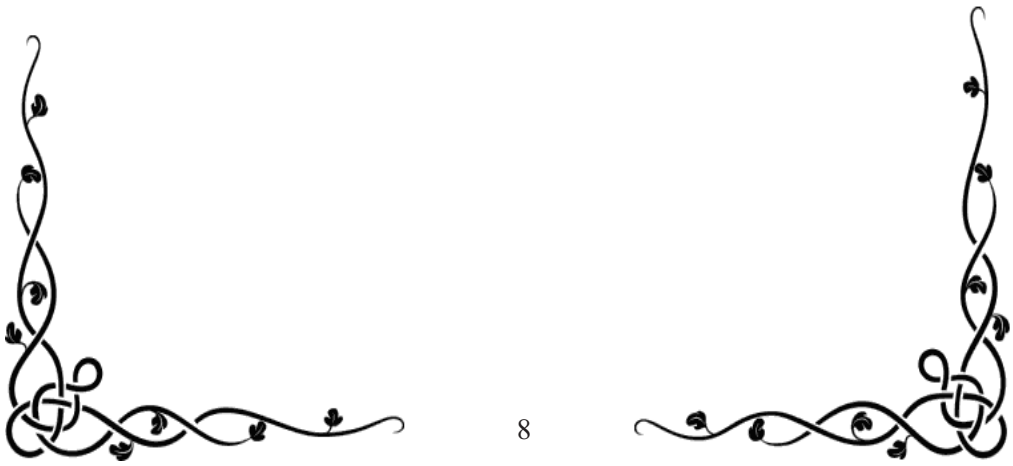

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 9

महफ़िल–ए–इश्क़

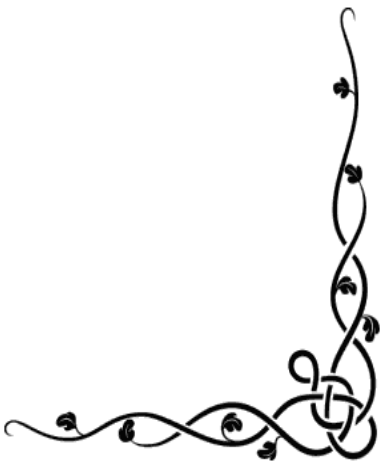

बहार आने पर चमन महक जाता है
खुशी को देख कर ग़म सहक जाता है
मचलते शबाब पे जब आती है रवानी
इन्सां तो इन्सां खुदा भी बहक जाता है

हंस के जीओ या रोके जीओ हर हाल में जीना है
उम्मीद तैराक़ का साहिल डूबते का सफ़ीना[1] है
जिस जा[2] पे अंदाज़ से पा[3] रखे महबूब किसी का
आशिक़ के लिए वो ही मक्का है वो ही मदीना है

1. नाव 2. जगह 3. पांव

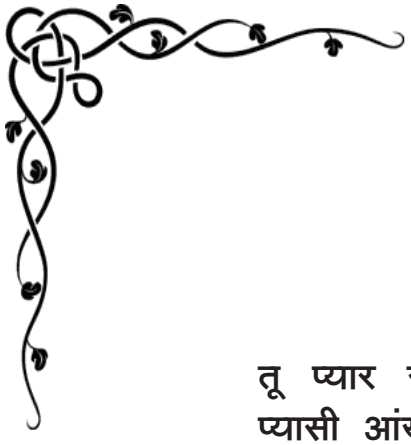

तू प्यार से भी प्यारा है सनम
प्यासी आंखों का नज़ारा है सनम
बस यही सोच के जी लेते हैं हम
तू किसी और का नहीं, हमारा है सनम

दर्दो-ग़म[1] को हमने हमनशीं[2] बनाया है
नाज़ो-अदा[3] दे के तुझे नाज़नीं[4] बनाया है
इक़ यही गुनाह हुआ है ज़माने में हक़ीक़त से
कि हमको जवां और तुझको हसीं बनाया है

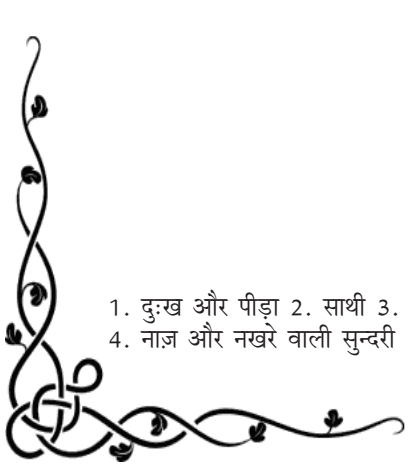
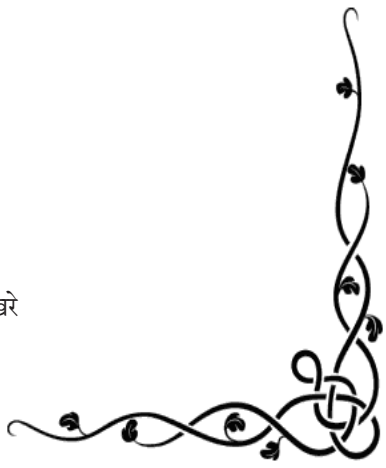

1. दुःख और पीड़ा 2. साथी 3. सुन्दर हाव भाव और नखरे
4. नाज़ और नखरे वाली सुन्दरी

इश्क़ गंगो-जमन की पाक[1] धारा है
हुस्न खुदा का पुरनूर[2] नज़ारा है
बरबादिये-चमन देख के न रो ए बुलबुल!
हिज्र[3] खिज़ा[4] तो वस्ल[5] मौजे-बहारां[6] है

वो दिल, दिल ही नहीं जिसमें दर्दो-ग़म न पले हों
वो शमां, शमां नहीं जिसपे परवाने न जले हों
वो राहे-मुहब्बत सूनी-ओ-स्याह हुआ करती है
जिसपे बेक़रार दिल चिराग बनके न जले हों

1. पवित्र 2. आभा से परिपूर्ण 3. विरह 4. पतझड़ 5. मिलन 6. बहारों की लहर

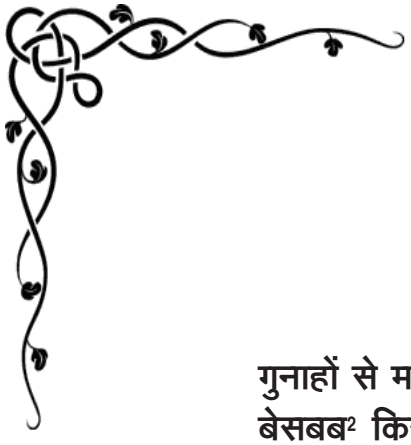

गुनाहों से महरुम[1] कोई रात नहीं होती
बेसबब[2] किसी से मुलाकात नहीं होती
वो चमने-इश्क़[3] वीरान हुआ करते हैं
जिनमें अश्कों की बरसात नहीं होती

वफ़ा की बस्ती वीरान हुआ करती है
जफ़ा की मस्ती बदनाम हुआ करती है
पाक मुहब्बत का मज़ाक उड़ाने वालो!
यह हंसी भी इक़ इल्ज़ाम हुआ करती है

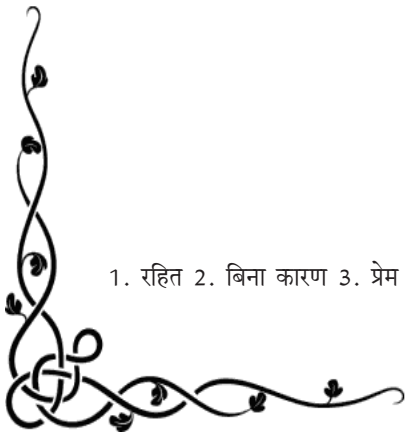
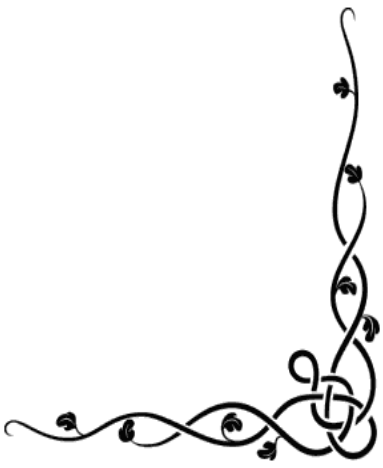

1. रहित 2. बिना कारण 3. प्रेम की बगिया

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 14

तेरे रुख़सार[1] की लाली की कसम
जलते दिल की दीवाली की कसम
आंखों से पिला मदहोश बना दे साक़ी
तुझको तेरी आंख शराबी की कसम

तेरे लबों की लाली दिल में आग लगा देती है
पीता हूं मैं जितनी, उतनी प्यास बढ़ा देती है
ए हसीनों के हसीं! अब तो करले रिंदों[2] पे यक़ीं
बिन पिए ही तेरी नज़र मस्ताना बना देती है

1. गाल 2. शराबी

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 15

हसीनों की गलियों से ख़रीदो ग़म
मनाओ अपनी खुशियों का मातम
तुम हमेशा ही ग़मगीन[1] रहोगे
वो रहेंगी हरदम यूं ही बे-ग़म

मैं जवानी में फंस गया हूँ
परेशानी में फंस गया हूँ
नामुमकिन है अब निकलना
हुस्ने-मेहरबानी[3] में फंस गया हूँ

1. दुःखी 2. कृपालु सुन्दरता

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 16

सुकूं मिलता है हमें जब उनका पयाम आता है
तड़पने वालों को बस मरके आराम आता है
तिश्ना-ए-दीदार[1] और भी बढ़ जाती है ए साक़ी!
जब भी इन प्यासे लबों पे तेरा नाम आता है

हमने लुटाई है जवानी अपनी
फ़साना बनाई है कहानी अपनी
कैसे छोड़ दें तेरा ख़्याल सनम
जो बन चुका है ज़िन्दगानी अपनी

1. दर्शनों की प्यास

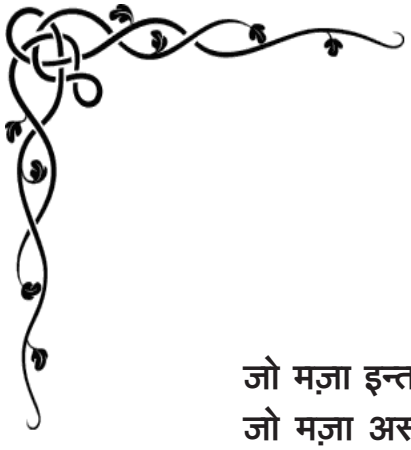
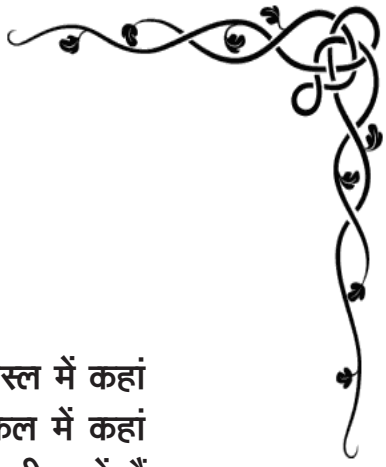

जो मज़ा इन्तज़ार में है, वो वस्ल में कहां
जो मज़ा असल में हैं, वो नकल में कहां
यारब! ये तो सब मज़ा लेने की बातें हैं
जो बात असल में है, वो दरअसल में कहां

अमन की तुरबत[1] पे न कोई बगावत की है
अदब[2] की महफ़िल में न कोई अदावत[3] की है
सज़ा की हसरत में बस यही है ख़ता मेरी
कि मैंने इक़ ज़ालिम से मोहब्बत की है

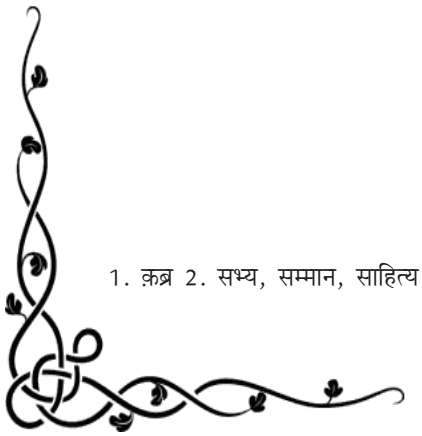
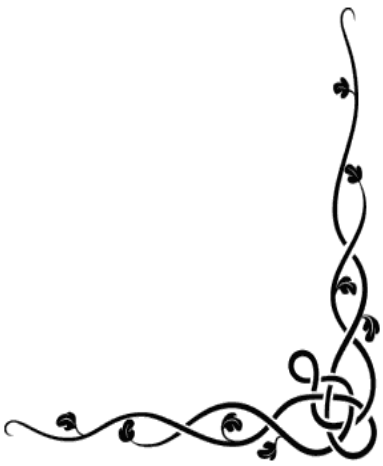

1. क़ब्र 2. सभ्य, सम्मान, साहित्य 3. दुश्मनी

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 18

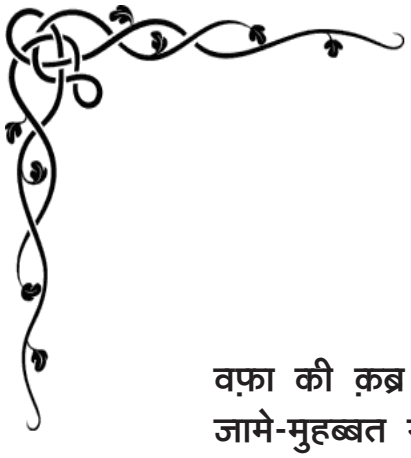

वफ़ा की क़ब्र पे जश्न मनाने वाले बहुत हैं
जामे-मुहब्बत में जफ़ा पिलाने वाले बहुत हैं
मैं परेशां हूं किस-किस के साथ हंसूं महफ़िल में
मेरे हाल पे हंस के रुलाने वाले बहुत हैं

हमने तो खुद अपनी बरबादी की है
आरज़ू-ए-वस्ल[1] आहों में जला दी है
तंग आकर बेवफ़ाओं के वायदों से
बेतक़ल्लुफ़ हो दर्द से शादी की है

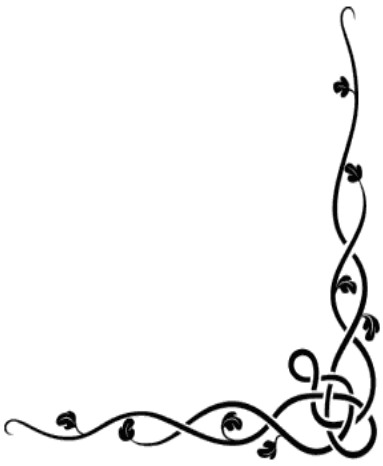

1. मिलन की इच्छा

तू खुश रहे तुझे कोई भी रंजो-ग़म न मिले
रंगीं हो तेरा जहां, कभी दर्दे-आलम न मिले
इस तमन्ना के बाद बस यही है तमन्ना मेरी
दिले-वीरां में कभी गुले-तमन्ना न खिले

जो न मिट सकेंगे वो उनकी ज़ुल्फों के ख़म हैं
हंसने को ये महफ़िल है और रोने को हम हैं
मातमे-ज़िन्दगी[1] में मज़ार तलक जो साथ चलेंगे
साथ हमारे बिलखते हुए बेशुमार[2] वो गम हैं

1. जीवन का शोक 2. अनगिनत

अरसा हुआ है उनसे मुलाकात हुई
याद आती है हरेक जो बात हुई
ख़्याल जो आया तो घिर आई घटा
और खुलीं जो पलकें तो बरसात हुई

मेरी ख़ामोशी को वो बेरुखी मानते हैं
निगाहे-भरम[1] को निगाहे-सितम[2] मानते हैं
यारब छलक जाते हैं जाम उनकी आंखों के
वो जब भी मेरे दिल का हाल जानते हैं

1. सम्मान रखने वाली निगाह 2. निर्दयी निगाह

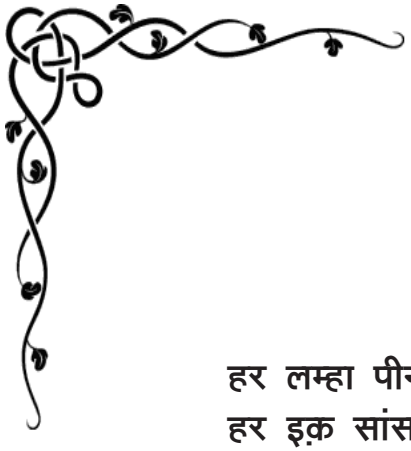
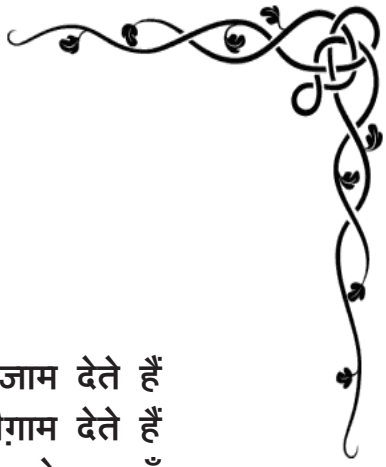

हर लम्हा पीने को ग़म का जाम देते हैं
हर इक़ सांस में मौत का पैग़ाम देते हैं
वफ़ा की राहों में मिट के ख़ाक हो गया हूँ
सनम फिर भी जफ़ाओं का इल्ज़ाम देते हैं

हमारी बरबादी का नाम अफ़साना हो गया
शराबे-ग़म के लिए ये दिल पैमाना हो गया
जिस जिस ने मिटा डाला बेखुदी[1] में खुद को
उस आवारा ख़ाक का नाम दीवाना हो गया

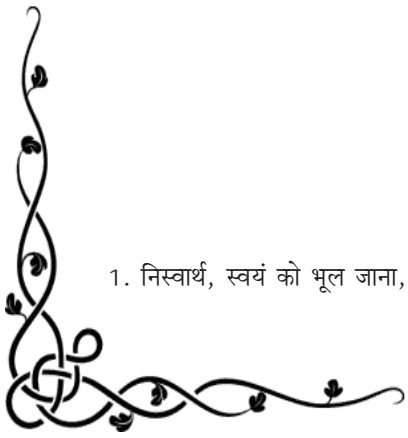
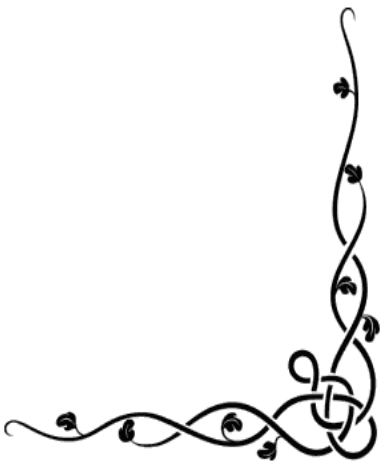

1. निस्वार्थ, स्वयं को भूल जाना, आत्म विसर्जन

ग़मे-इश्क़ ने हमें बदनाम किया है
हर लम्हा यहां ग़म का जाम पिया है
छोड़ के तन्हा हमको भुलाने वाले!
हर सांस में हमने तेरा नाम लिया है

ज़िन्दगी में ना हीं सुकूं[1], ना हीं प्याम आता है
सैलाबे-ग़म[2] जब भी आता है बेलगाम आता है
सिसक सिसक के हसरतें सो जाती हैं तन्हाई में
मेरे लबों पे जब भी सनम का नाम आता है

1. शांति 2. दुःख की बाढ़

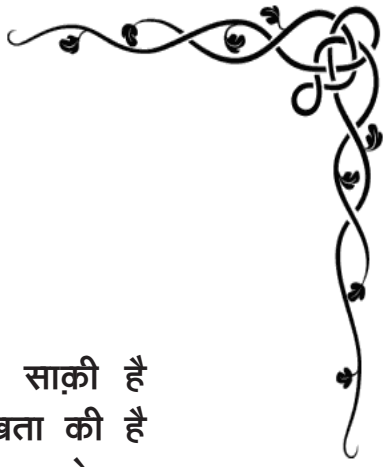

यारब! मुझसे नाराज़ मेरा साक़ी है
मैंने निगाहों से पीने की ख़ता की है
बहुत पी चुका पैमानों में शराबे-ग़म
अब तो फ़कत ज़िन्दगी को पीना बाकी है

तेरी याद आती है तो जीने का अन्दाज़ लगाता हूँ
हक़ीक़त कहीं अफ़साना न बन जाए, हर राज़ छुपाता हूँ
ख़ामोशी के आलम में सब सुन लेती है यह दुनिया
नज़रों की बेताबी से तुझे, जब आवाज़ लगाता हूँ

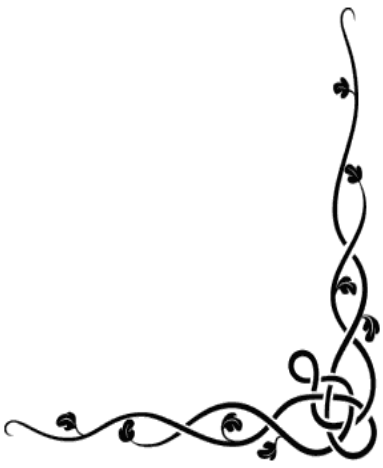

रह रह के बरसते हैं तेरी याद के बादल
ग़म की बदली में तू बर्क़[1] बन के न चल क़ातिल
होठों पे तबस्सुम[2] ले मुझको रुलाने वाले
तुझको भी रुलायेंगे मेरी याद के बादल

एहसास नहीं तुझको को कि हम तुझे याद करते हैं
वीरां दिल को तेरी यादों से आबाद करते हैं
ओ बेरहम! बर्क़ बनके चमन बरबाद कर दिया
खुश रहो, जहां भी रहो यही फरियाद करते हैं

1. बिजली 2. मुस्कान

छुपा करके राज़े-दिल, गुलिस्तां आबाद करते हैं
पी करके अश्क अपने, महफ़िलों को शाद[1] करते हैं
ए बुलबुल ! खिज़ा आई, तू दूसरे चमन चली गई
इस चमन के मुरझाये गुल तुझको याद करते हैं

हम बेखुदी में खुद को ख़ाक करते हैं
जाने कितने दिल इरादे नापाक[2] करते हैं
छोड़ नादानी, होश में आ ए भोले सनम
हम तड़प तड़प के दामन चाक[3] करते हैं

1. प्रसन्न 2. अपवित्र 3 छलनी, तार तार

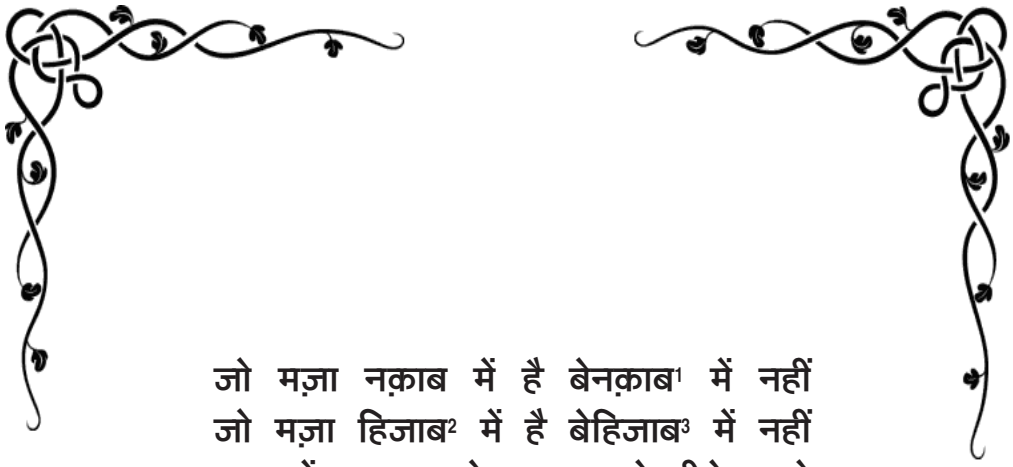

जो मज़ा नक़ाब में है बेनक़ाब[1] में नहीं
जो मज़ा हिजाब[2] में है बेहिजाब[3] में नहीं
जाम में भर भर के शराब को पीने वालो
जो मज़ा शबाब में है वो शराब में नहीं

झटक के ज़ुल्फ़ें घटा छाने का अन्दाज़ दिखलाते हैं वो
लबों पे बिखरा के तबस्सुम[4] बिजलियां गिराते हैं वो
मय़खाने के दर पे हम इक़ इक़ बूंद को तरस जाते हैं
और मयक़श[5] नज़रों से जाम पे जाम छलकाते हैं वो

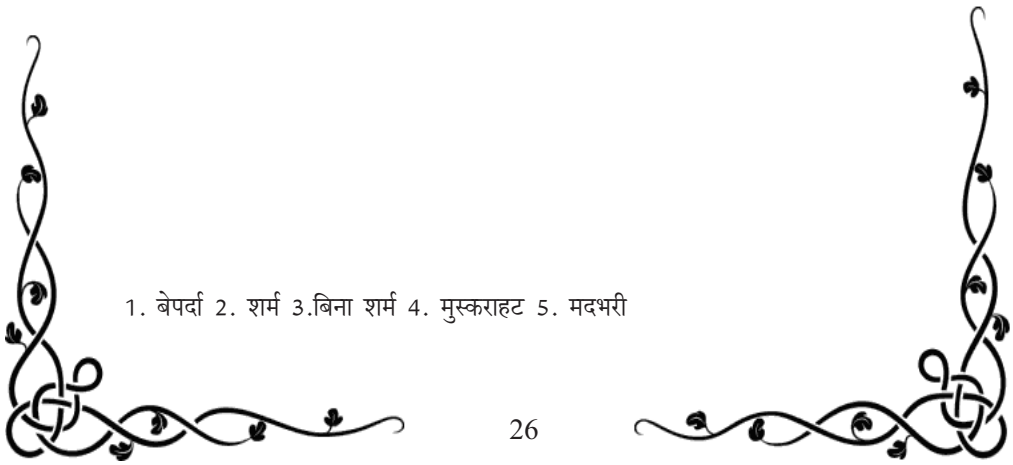

1. बेपर्दा 2. शर्म 3.बिना शर्म 4. मुस्कराहट 5. मदभरी

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 27

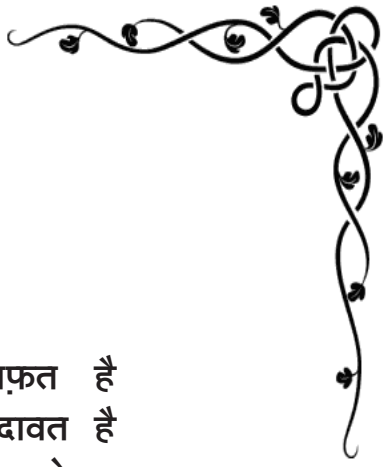

मजबूरी का नाम शराफ़त है
हक़ मांगना भी इक़ अदावत है
सय्यादे-सितम से बेअसर जो न
दब सकी वो इश्क़े-बगावत है

बेबस, बेक़स रुहों से ज़माना इन्तकाम[1] लेता है
नापाक इरादे रख पाक दिलों पे इल्ज़ाम देता है
जी में आता है बगावत कर दूं तेरे दामन के लिए
जब भी कोई मेरे नाम के साथ तेरा नाम लेता है

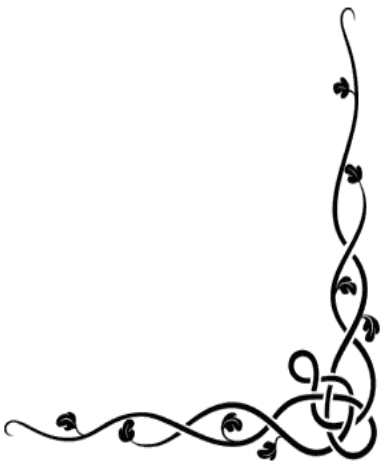

1. बदला

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 28

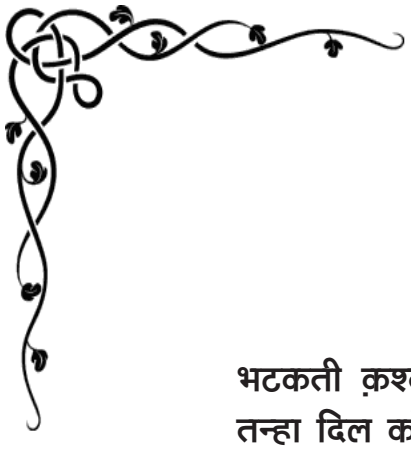
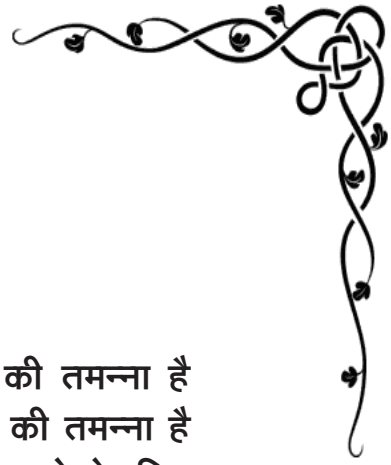

भटकती क़श्ती को साहिल की तमन्ना है
तन्हा दिल को तेरी महफ़िल की तमन्ना है
ए सनम् ! इस नाचीज़ को रहने के लिए
तेरे महलों की नहीं दिल की तमन्ना है

दिल के वीराने में उनकी तस्वीर नज़र आती है
सुनसान फिज़ाओं में अपनी तक़दीर नज़र आती है
जब भी भूले से कभी वो देखते हैं मेरी जानिब[1]
बेताब निगाहों में वफ़ा की तासीर[2] नज़र आती है

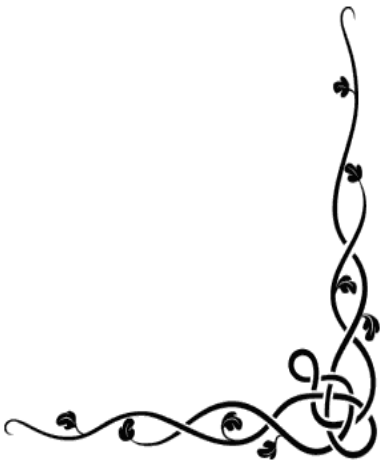

1.ओर 2. प्रभाव

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 29

दुनिया-ए-चमन में तू बुलबुल सी शाद रहे
सय्यादे-ग़म से दूर खुशियों में आज़ाद रहे
हर गुंचा-ओ-गुल तुझे देख हंसे कयामत तक
अब दर्द के आलम में दिल यही फ़रियाद करे

मुझे राह दिखाने वाले मंज़िल मुबारिक हो तुझे
मुझे तन्हा बनाने वाले महफ़िल मुबारिक हो तुझे
सफ़ीना-ए-ज़ीस्त[1] को जवानी में डुबोने वाले
हमारे हसीं ख्वाबों का साहिल[2] मुबारिक हो तुझे

1. जीवन की नाव 2. किनारा

वो हुस्न अपना बेनक़ाब लिए फिरते हैं
हम ज़ख्म दिल में बेहिसाब लिए फिरते हैं
इस जहां को बहलाने की ख़ातिर यारो!
हम महफ़िलों में दर्दे-साज़ लिए फिरते हैं

सनम तू जाने-दिल ही नहीं जाने-महफ़िल भी है
तू सुकूने-दिल[1] ही नहीं तूफान-ओ-साहिल[2] भी है
मैं कबहूं अच्छा, कबहूं खाना ख़राब सा फिरता हूँ
क्यों? तू मेरा चारागर[3] ही नहीं, क़ातिल भी है

1. दिल का चैन 2.तूफान और किनारा 3. इलाज करने वाला

तेरे होठों पे हरदम तबस्सुम बिखरे
मेरी आंखों से तो बस पानी बरसे
यही सोच के रो लेता हूं मेरे सनम
मेरे अश्कों से तेरी जवानी निखरे

दर्दों-ग़म से तू अनजान रहे
खुशियों से तेरी पहचान रहे
मेरे दिल की यही दुआ है सनम्
कि महशर[1] तलक़ तू जवान रहे

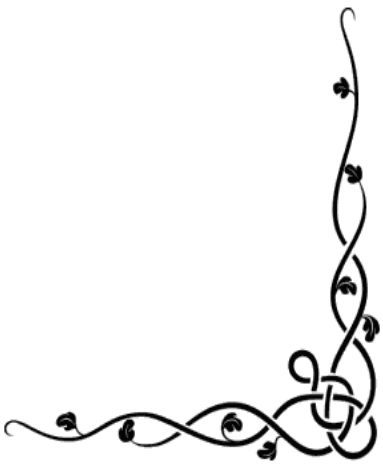

1. कयामत का दिन

अब न वो चमन होगा अब न वो राहें होगी
हसरतों के सहरा में बेबसी की आहें होंगी
अरमान लिये जब भी जाऊँगा उन फ़िज़ाओं में
अब न मुन्तिज़र[1] मेरे लिए वो निगाहें होंगी

शबनमी दामन पे मचल मचल पैरहन[2] से बादे-सबा[3] को रवानी देना
बाहिजाब-आरिज़[4] लबों पे तबस्सुम ले, वो आलम को ज़िन्दगानी देना
मुझे तन्हा छोड़ के जाने वाले! इन फ़िराक़[5] फ़िज़ाओं में हर रोज़ सुबह
याद आएगा रह रह कर तेरा वो गुनगुना के गुलों को पानी देना

1. प्रतीक्षित 2.ऑचल 3.सुबह की ठंडी हवा 4. शर्म से लाल गाल 5. विरह में आकुल

आग़ोशे-तन्हाई और मौसम की पहली बरसात
कैसे बीतेगी बगैर तेरे ये भीगी-भीगी रात
ऐ ठंडी हवा! अब तू नग्माए-विसाल[1] न छेड़, क्यों?
मिलना तो दूर, अब न होती है निगाहों से भी बात

दूर कहीं झूम के जो उठते हैं बादल
लगते हैं वो क़ुदरत की आंख का काजल
इन्तज़ारे-वस्ल[2] में कहीं रोता है कोई, तो
बज उठती है कहीं मोर के पांव की पायल

1. मिलन के गीत 2. मिलन की प्रतीक्षा

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 34

जिसे समझा था हक़ीक़त वो झूठी कहानी निकली
जवानी के नशे में हरेक खुशी परेशानी निकली
इन भटकते कदमों से मंज़िल तलक़ पहुंचता कैसे
मैं जिस राह चला था वो राह ही अनजानी निकली

चाक[1] गरेबां[2] देख मेरा, उनकी निगाह बदल गई
शोक़े-फ़रेबे-हुस्न[3] में उनकी चाह बदल गई
देख करके घर मेरा बरबादियों के गांव में
दामन बचा, चुपचाप ज़िन्दगी भी राह बदल गई

1. छलनी 2. आंचल, पोशाक़ 3. सुंदरता के धोखे वाला शौक़

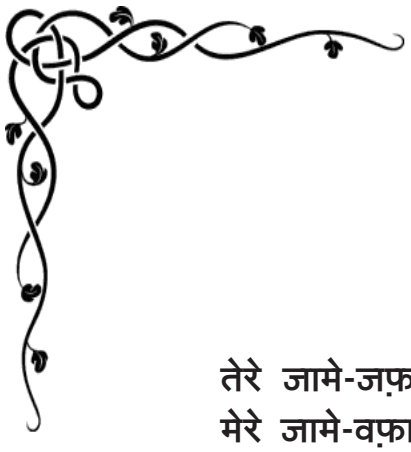
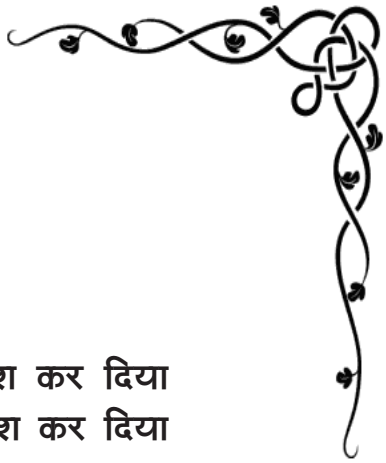

तेरे जामे-जफ़ा ने, हमें बेहोश कर दिया
मेरे जामे-वफ़ा ने, हमें मदहोश कर दिया
दिल तड़प उठा जब भी कोई अफ़साना सुना
ख़ामोश हक़ीक़त ने हमें ख़ामोश कर दिया

खो दिया जो तुझको तो कोई मलाल नहीं
मिटा दिया जो खुद को तो कोई कमाल नहीं
देख अपनों की बेरुखी, ग़ैरों की दिल्लगी
बस दुआएं है लब पे कोई सवाल नहीं

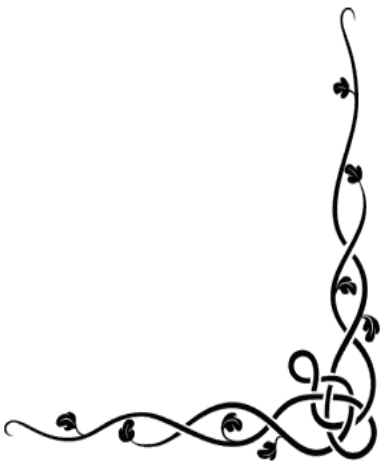

जवानी निकल जाती है जब हसरत जवां होती है
ज़िन्दगी फिसल जाती है जब उल्फत रवां होती है
चाहत के नशे में मदहोश, ग़म से मुहब्बत कर ले
ज़िन्दगी में खुशी चन्द लम्हों की मेहमां होती है

वफ़ाओं के दामन में आह होती है
गुनाहों से ज़िन्दगी तबाह होती है
क़ैदे-हवस[1] में इंसां है कि किए जाता है
रोज़े-महशर[2] हक़ीक़त गवाह होती है

1. वासना के वश में 2.फैसले का दिन

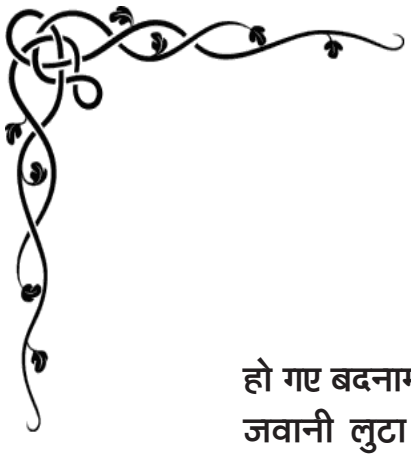

हो गए बदनाम हम, जब भी कभी आह की
जवानी लुटा दी और दुनिया तबाह की
जब ज़ख्मे-दिली कह सुनाई गज़लों में
तो सरे-महफ़िल तुमने भी वाह वाह की

मेरी हर नज़र में वो इल्ज़ाम लगाते हैं
जब चाहे दिल में चुपके से चले आते हैं
गर मैं रखूं उनपे नज़र, जहां का दस्तूर
उल्टा चोर मुझी को डांटे, फरमाते हैं

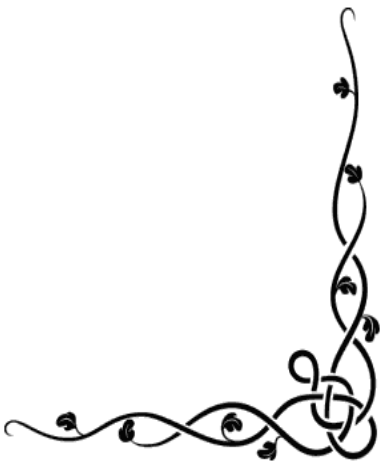

हम ज़माने की इनायत का तस्सुवर[1] न करेंगे
दर्द से जब भी मिलेंगे तो तकल्लुफ़[2] न करेंगे
नसीब में तेरा दीदार[3] नहीं तो कोई बात नहीं
तेरे तस्सुवर में जिए हैं, तेरे तस्सुवर में मरेंगे

यूं ज़िन्दा रहे तो ज़िन्दगी भर मुस्करा न सकेंगे
तड़पे रहे हैं, तड़पेगें, मगर तड़पा न सकेंगे
क्या उनको मिल गया यूं बरबाद करके हमको
वीरां है दिल मगर उनको कभी खिज़ा[4] न कहेंगे

1. कल्पना, ख्याल, विचार 2. औपचारिकता 3.दर्शन 4. पतझड़

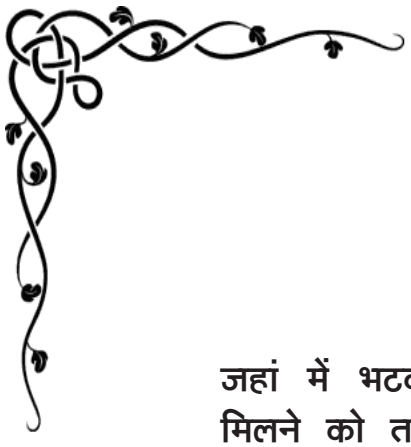
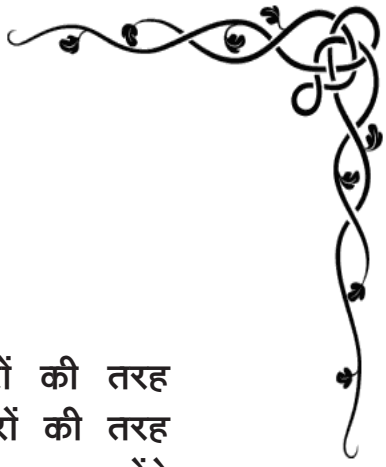

जहां में भटकते हैं बेसहारों की तरह
मिलने को तड़पते हैं किनारों की तरह
मुहब्बत के जनाज़े का शिक़वा न करेंगे
ख़ामोश हैं श्मशां में मज़ारों की तरह

तड़पता हूं औरों के लिए किसी को एहसास न होगा
बाद मरने के, सिवा तन्हाई कोई उदास न होगा
अपनों और ग़ैरों को देख के अब यक़ीन है मुझको
मैं जब भी मरुंगा, सिवा-ए-ग़म कोई पास न होगा

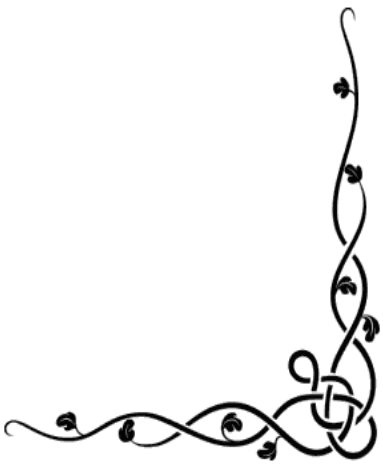

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 40

अब गुलों का नहीं, ख़ारों[1] का एतबार है मुझको
उजालों का नहीं, अंधेरों का एतबार है मुझको
ता-उम्र खा खा के ठोकरें सुकूं की तलाश में
ज़िन्दगी का नहीं, बस मौत का एतबार है मुझको

वो निगाहे-करम उनकी, निगाहे-सितम बन गई
खुशियों की हरेक हसरत, ज़खीरा-ए-ग़म[2] बन गई
तेरे क़ाबिल बनने की हर कोशिश राहे-इश्क़ में
खा खा के ठोकरें, नाकामी-ए-मातम[3] बन गई

1. कांटे 2.गम का खजाना 3. असफलता का दुख

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 41

हसरत थी, ज़िन्दगी किसी के काम आ जाए
आरज़ू थी, उनका कभी पयाम आ जाए
दुआ है, ख़ाक मेरी उनके पा को छूने को
दरे-आमद[1] की दहलीज़ के काम आ जाए

जीते हैं तुम्हें हबीब कहते हैं
मरते हैं दिल के करीब रहते हैं
अपनी वीरां रह गुज़र पे पाके तुम्हें
हम खुद को खुशनसीब कहते हैं

1. आने का द्वार

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 42

ग़म से मुहब्बत है, खुशी का तलबगार नहीं हूँ
जामे-वफ़ा पीता हूं, जफ़ा का तरफ़दार नहीं हूं
राहे-मुहब्बत में बेसबब पाक रुहों को सता के
मौत के काबिल हूं, जीने का हक़दार नहीं हूँ

बेबसी के अश्कों के लिए यह ज़िन्दगी जाम बन गई
बरबादियों के आराम का इक़ दिलकश मुक़ाम बन गई
इन्तज़ारे-सुबह में बेकल हर रात कटी, दिल-तड़प उठा
जब उम्मीदे-सहर[1] सिसक सिसक के यासे-शाम[2] बन गई

1. सुबह की आशा 2. शाम की निराशा

अपने तड़पने का हमें मलाल नहीं
दुआएं हैं लब पे कोई सवाल नहीं
कैसे समझाएं उस दीवाने को जिसे
बेखुदी में खुद का भी कोई ख्याल नहीं

क्या गरज़ तूफां को कि साहिल पे क्या बीती
बाद जाने के उनके महफ़िल पे क्या बीती
ख़ामोश हैं वो, ख़ामोश हैं हम, खुदा जानता है
इस दिल पे क्या बीती और उस दिल पे क्या बीती

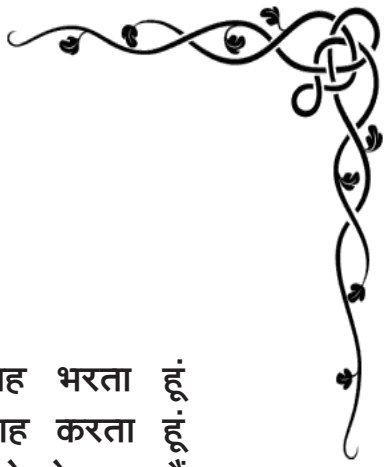

खुद तड़पता हूं, खुद आह भरता हूं
दुनिया की निगाह में गुनाह करता हूं
पीता हूं इसी ग़म में कि वो बेख़बर हैं
जिनके लिए यह ज़िन्दगी तबाह करता हूं

जफ़ा की बात करता हूं मगर वफ़ा करता हूं
दवा की बात करता हूं, दर्द सिवा करता हूं
राहे-इश्क़ में मर मिटने की इन्तिहा है ये कि
कज़ा की बात करता हूं और जिआ करता हूं

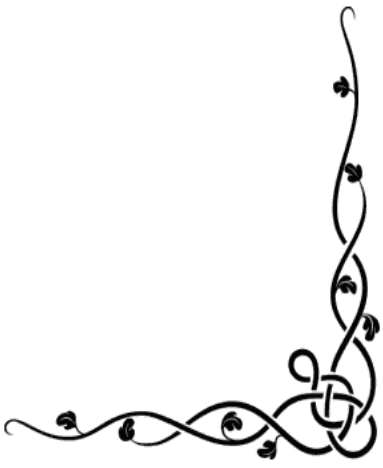

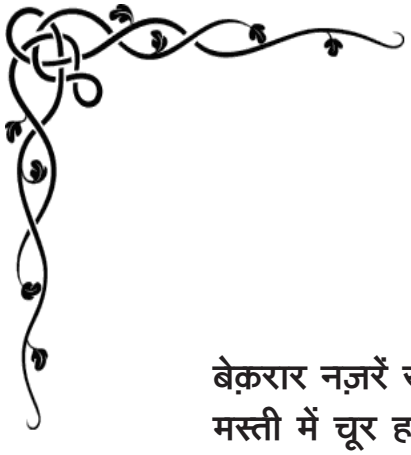
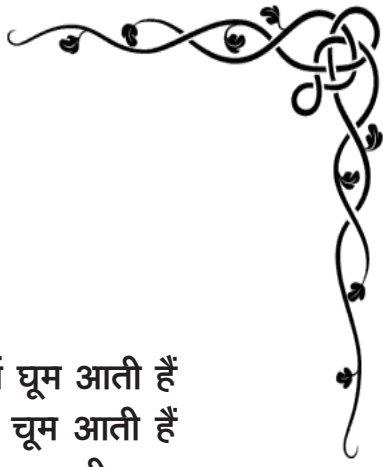

बेक़रार नज़रें खुले आसमानों में घूम आती हैं
मस्ती में चूर हसीन नज़ारों को चूम आती हैं
बेबस उम्मीद के कंधों पे आवारा बादल की तरह
लौट के नज़रें तेरे दीदार से महरुम[1] आती हैं

जब याद आता है वो बेकसी का ज़माना
लबों पे मचलता है तन्हा ग़म का तराना
यह सोच के तुझको कहीं नागवार[2] न गुज़रे
खुद को ही सुनाता हूं मैं अपना फ़साना

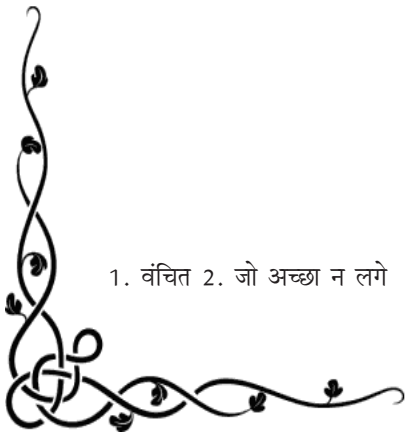
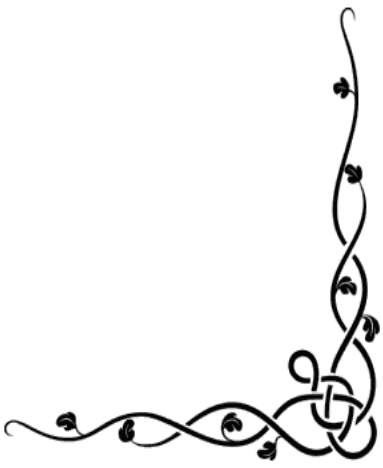

1. वंचित 2. जो अच्छा न लगे

गुनाहे-मुहब्बत ने हमें गुनहगार बनाया है
खुद को खिज़ा, बेखुदी में तुझे बहार बनाया है
यूं शक़ की निगाह से न देख हमें ए भोले सनम् !
तेरे लिए अपनी हसरतों का मज़ार बनाया है

जीते हैं अगर हम तो मौत का इक़ जाम पिला दो
दौरे-जवानी में, इस ज़ीस्त की शाम मिटा दो
ओ बेवफ़ा ! अपनी राहों में तुम रोशनी के लिए
मेरी हसरतों के जनाज़े को अब आग लगा दो

इस दिल ने हमें परेशान कर दिया
खिज़ा-ए-ग़म ने इसे वीरान कर दिया
हर सू तन्हा खुशियों के मज़ारों ने
मेरी ज़िन्दगी को श्मशान कर दिया

खुशी आती है करीब से होकर गुज़र जाती है
हरेक़ तमन्ना दर्द के सांचे में लरज़ जाती है
ये ख़ता तेरी नहीं, ऐसा ही है मेरा नसीब
हरेक़ निगाहे-मुहब्बत नफ़रत में बदल जाती है

इब्तदा-ए-मुहब्बत[1] ही अंजाम हो गई
जवानी ही ज़िन्दगी की शाम हो गई
छेड़ो शहनाई यह वक़्ते-रुख़स्त[2] है
वफ़ा की डोली जफ़ा के नाम हो गई

ग़मे-इश्क़, तेरा ख़्याल मेरे करीब रहते हैं
अब दर्दे-दिल को ही मेरा नसीब कहते हैं
सफ़ीना-ए-इश्क़[3] को साहिल पे डुबोने वाले
आज यूं हंस हंस के मुझे बदनसीब कहते हैं

1. प्रेम का आरंभ 2. बिछुड़ने की बेला 3. प्रेम की नाव

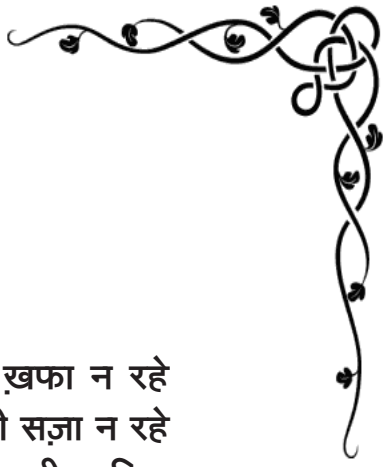

जिंऊ तो ऐसे जिंऊ, कोई भी ख़फा न रहे
जो न मिली हो मुझको, कोई भी सज़ा न रहे
रहे न उसकी जफ़ा में कोई भी कमी आखिर
मगर वो भूले से भी मुझ को बेवफ़ा न कहे

उम्मीद का साज़ कभी बजाया न करो
दिल का राज़ किसी को बताया न करो
बेवजह ही बढ़ जाती है बेक़रारी
हुस्न वालो! बुला के सताया न करो

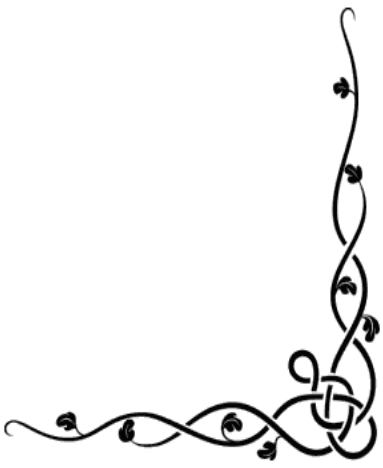

शराबे-ग़म के लिए यह ज़िन्दगी पैमाना है
खुशी की धड़कनों को इस दिल ने न जाना है
ख़ामोश हक़ीक़त से नावाकिफ़[1] है यह दुनिया
हर लब ने जो गाया वो तो फ़कत अफ़साना है

उनको खबर नहीं, उनके बगैर जीता हूं मैं
यादों के तार से चाके-जिगर[2] सीता हूं मैं
खाने को मिलती हैं यहां दर दर की ठोकरें
पीने को जामे-दर्द[3] भर भर के पीता हूं मैं

1. अनजान 2. छलनी हृदय 3. पीड़ा के जाम

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 51

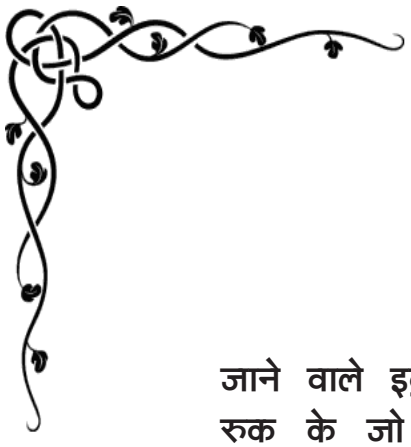
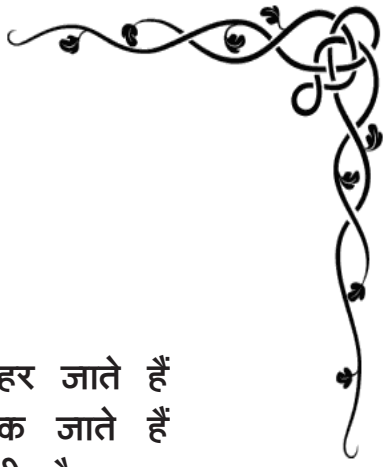

जाने वाले इक़ पल को ठहर जाते हैं
रुक के जो देखें वो बहक जाते हैं
मचलते शबाब पे जब आती है बहार
तब गुल तो गुल कांटें भी महक जाते हैं

हुस्न वाले मुझको बेक़रार कहते हैं
और चमन वाले ग़मे-बहार कहते हैं
तड़पते दिल के अरमानों की लाशों पे
कफ़न वाले सुलगता शरार[1] कहते हैं

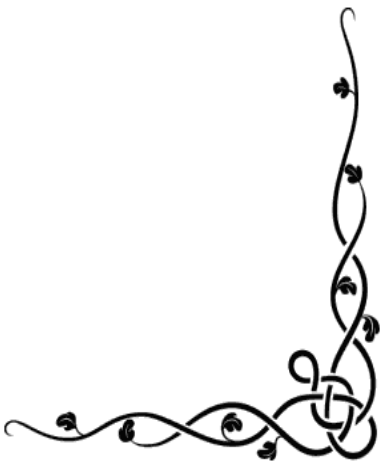

1. अंगारा

किससे कहें, कैसे कहें, और क्यों करके कहें
सोचता हूं, ख़ामोश रहें, ज़ुबां से कुछ न कहें
निगाहें इजाज़त दें तो अश्कों को बहा दूं मैं
हो सकता है फिर ग़मे-इन्तिहा[1] में ये बहें न बहें

चुन चुन के फोल दिल के दुखड़े, फिर बरबादी की बात आए न आए
तड़प तड़प के जाग अश्कों के साथ, फिर बेबसी की रात आए न आए
संभल ए दिले-नादां ! गर्दिशे-दौरां है, जी भर के देख ले, क्यों?
शायद ये फिर ग़मों की बारात, यूं सज के कभी आए न आए

1. गम की चरम सीमा

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 53

ज़िन्दगी किसके काम आई, क्यों आई, मुझको ख़बर नहीं
किस किसने मुझको लूटा, क्यों लूटा, मुझको ख़बर नहीं
न पूछो मुझसे मेरा हाले-बरबादी, मैंने लब सी लिए
यारो! मैं कौन हूं, क्या हूं, कहां हूं, मुझको ख़बर नहीं

बस थोड़ी देर जीना है, जी लेने दो
सांसों का ज़हर पीना है, पी लेने दो
न पूछो मुझसे मेरा राज़े-बरबादी[1]
ज़ब्त ने सीए हैं लब, तो सी लेने दो

1. बरबादी का रहस्य

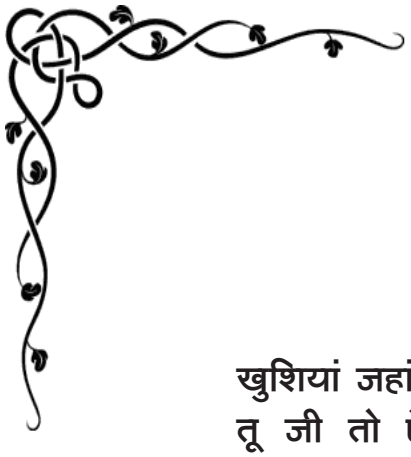

खुशियां जहां की किसी की नज़र कर जा
तू जी तो ऐसे जी कि असर कर जा
किसी को तड़पाने से बेहतर है कि
जैसे भी हो जहां से सफ़र कर जा

ग़म की मौजों में दिखता दूर किनारा है
किस्मत के शिकारे का हिम्मत ही सहारा है
अब हैं इस कशमकश में यारो कि यह कह दें
न हम हैं किसी के ना ही कोई हमारा है

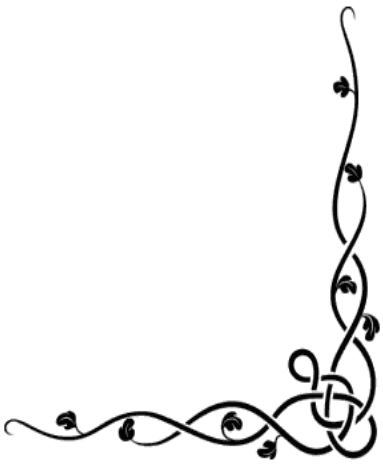

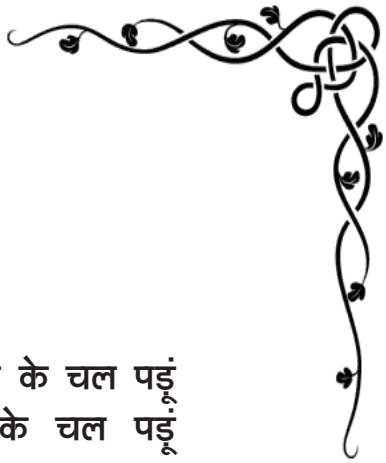

चमन जब वीरान हो बहार ले के चल पड़ूं
सनम बेक़रार हों क़रार लेके चल पड़ूं
मौत के आग़ोश में तड़प की आवाज़ सुन
दर्द को खरीदने मज़ार से मैं चल पड़ूं

मैं हर खुशी को मज़ार में दफ़ना के चला हूं
हर उम्मीद को यासे-कफ़न[1] पहना के चला हूं
श्मशां सी ज़िन्दगी वीरानों में बसर करके
तेरे लिए हर ज़र्रे को चमन बना के चला हूं

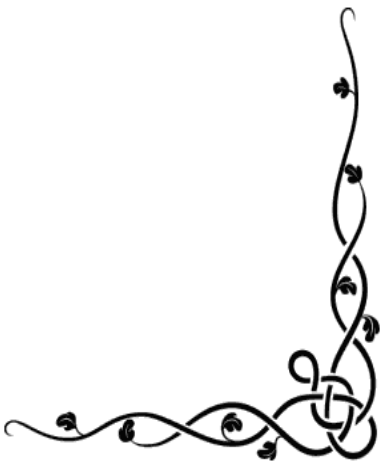

1. कफ़न की निराशा

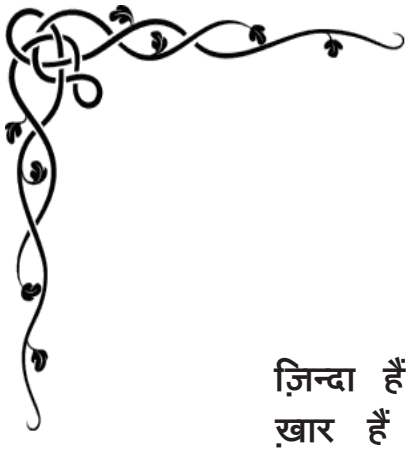
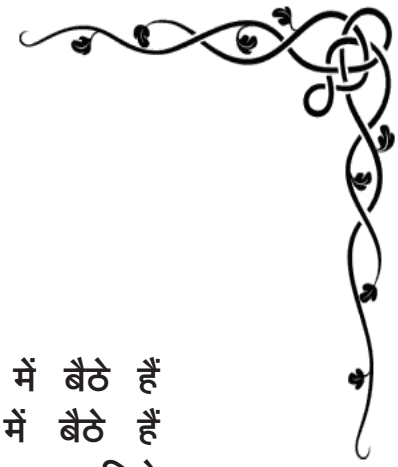

ज़िन्दा हैं मगर मज़ार में बैठे हैं
ख़ार हैं मगर बहार में बैठे हैं
कब मौत आए और हमें सुकून मिले
अब तो इसी इन्तज़ार में बैठे हैं

दुनियां ! तेरे दामन में हम परेशान हो गए
मौत के घर में चन्द रोज़ के मेहमान हो गए
हम किस किस के आग़ोश में अब सोएं ए मज़ार!
हर कदम पे पैदा हमारे लिए श्मशान हो गए

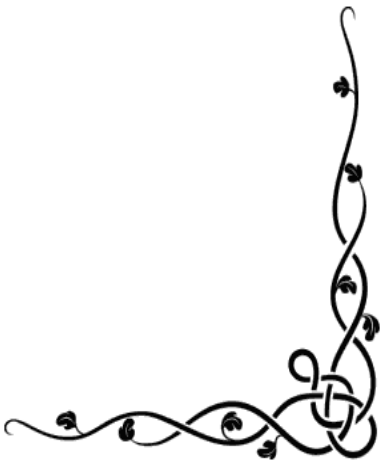

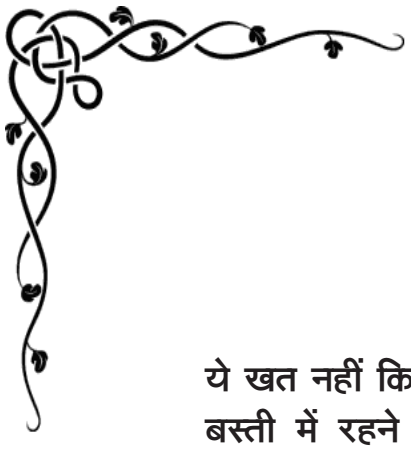
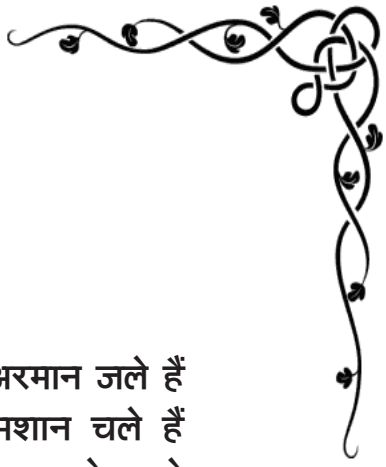

ये खत नहीं किसी बेगुनाह के अरमान जले हैं
बस्ती में रहने वाले बेज़ुबां श्मशान चले हैं
लब पे अफ़साने ले पांव से राख उड़ाने वालो
ये इंसां के नहीं, इन्सानियत के फ़रमान जले हैं

मेरी हर सांस आह बन के तन्हाईयों में गुमनाम हुई जाती है
इल्ज़ामे-नफ़रत से इस आलम में मुहब्बत बदनाम हुई जाती है
मेरी मय्यत को उठाने वालो! अब देर नहीं, तुम्हारी इनायत से
ग़मों के साए में दौरे-जवानी, ज़िन्दगी की शाम हुई जाती है

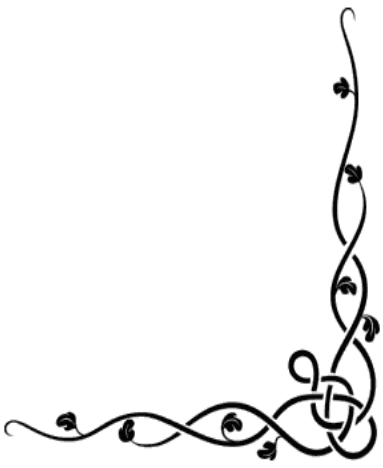

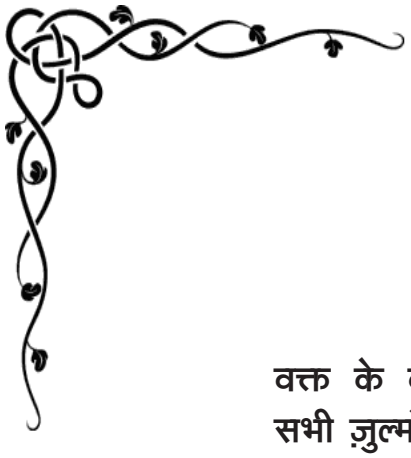

वक्त के कन्धों पे हम चले जाएंगे
सभी ज़ुल्मों-सितम ख़ामोश सहे जाएंगे
किसी को याद फिर आए न आए हमारी
दर्दो-ग़म को हमेशा याद आएंगे

चन्द गुनाहों की इक़ तस्वीर हूं मैं
जो न बन सकी वो तक़दीर हूं मैं
उलझ के रह गईं बरबादियां जिसमें
गर्दिशे-दौरां की वो ज़ंजीर हूं मैं

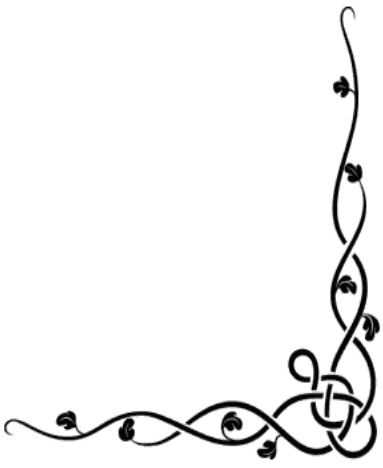

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 59

हुस्नो-इश्क से ये दुनिया थमी है
इनकी अदा से इठलाती ज़मीं है
जो चाहे बना दे, है तेरी तजल्ली[1]
फिर तू ही बता क्यों इनकी कमी है

इश्क़ है, हो गया, ये किया जाता नहीं
दर्द है, बढ़ गया, ये दिया जाता नहीं
बेकली, बेकसी, चार सू है बेबसी
सांस है, आस है, पर जिया जाता नहीं

1. रचनात्मक वैभव

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 60

शराबे–ग़म

इस सांझ का ऐसा आलम है, पीते जाओ पिलाते जाओ
गर ग़म को हल्का करना है, सुनते जाओ सुनाते जाओ
गिर के उठो या उठ के गिरो इस साज़िशे-गर्दिशे-दौरां में
इस आलम का यही तक़ाज़ा है उठते जाओ उठाते जाओ

पैमाने को देखा, लब तरसते रहे
सूकूं न मिला हम यूं ही तड़पते रहे
ये ज़िन्दगी तो हमने कफ़स में गुज़ारी
हमारी बला से मौसम बदलते रहे

ख़ामोशी के आलम में मय-ए-ज़िन्दगी पी रहा था
जामे-गुनाह पे सर को झुकाए सज़ा पी रहा था
बन के सवाली दर पे मेरे जब मौत आ गई
कसम ज़ीस्त की, मैं बैठा हुआ कफ़न सी रहा था

खिज़ा आ गई जब भूले से गुल मुस्कराने को था
सज़ा आ गई जब बज़्मे-गुनाह पे रंग आने को था
रिंदों की महफ़िल में जब ज़ाहिद[1] ने आके पुकारा
कसम मय की, पैमाने से पैमाना टकराने को था

1. उपदेशक

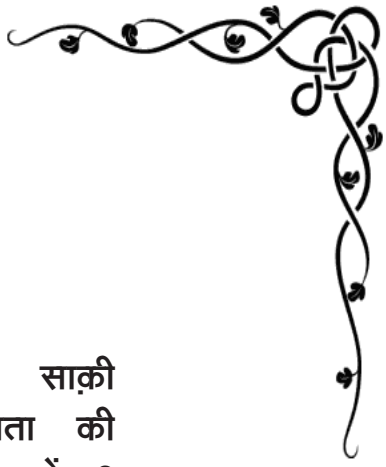

ज़माना तुम्हारा है साक़ी
मैंने है पीने की ख़ता की
मयख़ाना श्मशान है, क्यों ?
जलाता हूं यहां लाश वफ़ा की

तेरी यादों के पैमानों में शराबे-ग़म सहरो-शाम पिया करता हूं
कहीं बदनाम न हो जाए तू सर अपने तेरे इल्ज़ाम लिया करता हूं
मरने को तो मर जाते हैं रोज़ ही मरने वाले श्मशां की ख़ामोशी में
दर हक़ीक़त मरना तो यह है सनम कि तुझपे मर मर के जिया करता हूं

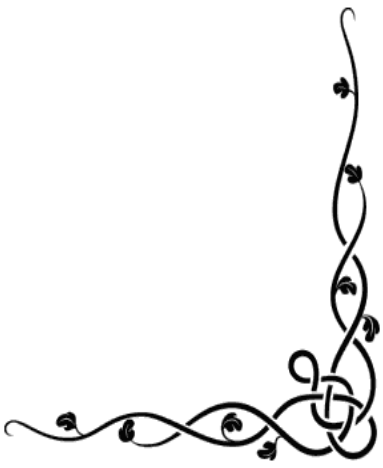

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 64

जहां मिले ग़म वो मुक़ाम मेरा है
हो न किसी का वो अंजाम मेरा है
लड़खड़ाता हूं राहे-ज़ीस्त[1] में क्यों?
भरा है दर्द जिसमें वो जाम मेरा है

वीरां रहगुज़र पे बरबादियों का एहतराम[2] करता हूं
जुस्तुजू में जो मिलती हैं ठोकरें उन्हें सलाम करता हूं
रिंदों को तड़पता छोड़ तूनें जब से निगाह फेरी है
बस अपने ही अश्कों से मैं किस्मत का जाम भरता हूं

1. जीवन की राह 2. स्वागत

मैं पीता हूं अपना ही दामन स्याह करता हूं
मत पियो यारो! तहे-दिल से आग़ाह करता हूं
तन्हा मयख़ाने में, किसी याद के पैमाने में
मैं हर कदम पे ग़म पीने का गुनाह करता हूं

ए खुदा! राहे-मस्जिद में कदम कदम पे मयख़ाना बना दे
दीदा-ए-तर[1] के लिए ज़र्रे ज़र्रे में सनमख़ाना[2] बना दे
अफ़साना-ए-इश्क़ महफ़िले-जानां बन आवारा फिरेंगे
इक़ बार ज़रा तू हुस्न को इश्क़ का दीवाना बना दे

1. भीखी आंखें 2. प्रेमी का घर

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 66

घटनाएं

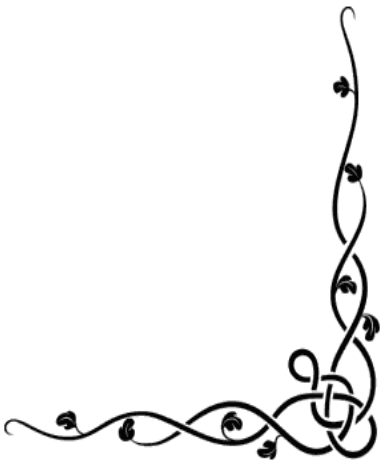

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:05 AM Page 67

कलम के आंसू

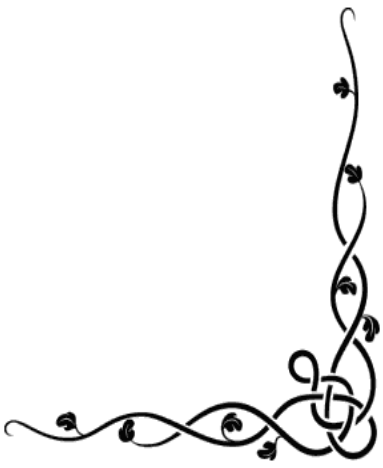

तन्हाईयों में ग़म के मीत बन गये
बेकसी में जवानी की रीत बन गये
सोज़ में डूबी कलम की रवानी के
ये वो क़त्तरे हैं जो गीत बन गये

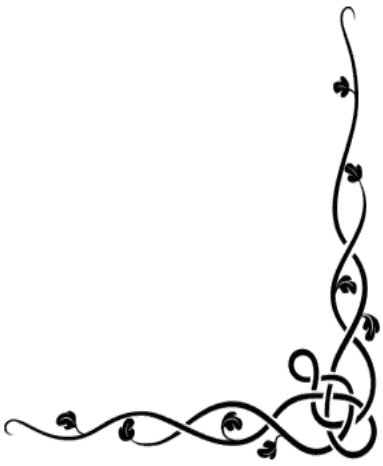

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 69

शायरी क्या है, टूटे दिलों का फ़साना है
उम्मीद क्या है, जीने का इक़ बहाना है
यारो! मशहूर है अपनी ज़िन्दा-दिली
सोज़ है दिल में और लबों पे तराना है

आई जो उनपे जवानी तो खुदा का फज़्ल[1] बन गई
टूटी जो हमपे कयामत तो बरबादिये-अज़्ल[2] बन गई
गर्दिशे-दौरां और नाकामियों के ज़लज़लों[3] में
झूम के उठी जो सदाए-दर्द[4] तो गज़ल बन गई

1. कृपा 2. नाश का आरंभ 3. भूचाल 4. पीड़ा की पुकार

शेर कहते हैं और खुद ही दाद देते हैं
इस फसले-दर्द को अश्कों की खाद देते हैं
कुछ ऐसा ही है ये जन्म दिन अपना, खुद ही
खुद को तड़प तड़प के मुबारिकबाद देते हैं

गज़लों से मोहब्बत है शेरों की इनायत[1] है
न तुझसे गिला है ना ही उससे शिकायत है
मुस्काना, अपनाना, अपना के तड़पाना
ये मेरी नहीं, उसकी नहीं, हुस्न की आदत है

1. कृपा

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 71

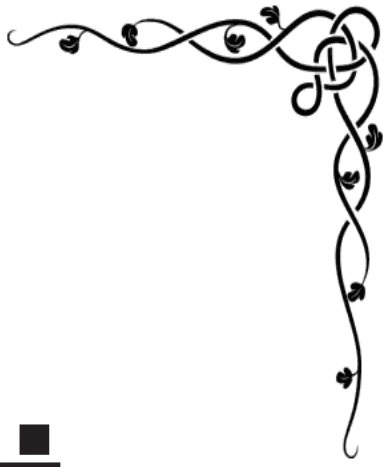

घटनाएं

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 72

जो अपने हैं

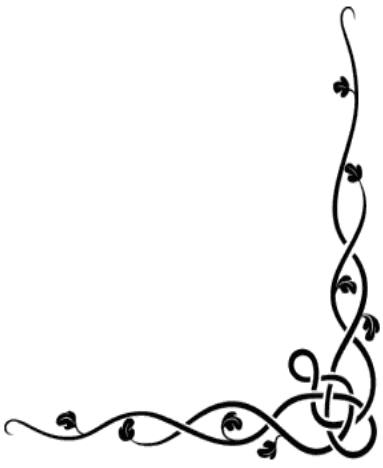

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 73

माँ तेरे प्यार, तेरे एहसानों को सोच मेरी आंखें नम है
जब तलक़ तेरा हाथ है सर पे, न डर है कोई न ग़म है
तेरी कुरबानी वो कर्ज़ है माँ जिसको चुकाने की ख़ातिर
मैं इक़ जन्म तो क्या लाख जन्म भी तेरा बेटा बनूं कम है

इन्सानियत के नाम पर सहरो-शाम जी रहा हूं
लबरेज़[1] जामे-नसीहत[2] मस्त होके पी रहा हूं
जब तलक बड़े हैं सरपे, मुझको भला क्या गम है
कदमों पे उनके चलके, किस्मत को सी रहा हूं

1. भरा हुआ 2. उपदेश रुपी प्याला

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 74

रात स्याह होती है रंगीन सुबह में बदलने के लिए
कली जवां होती है गुले-पुरनूर[1] में मचलने के लिए
वक़्ते-रुख़सत[2] है हंसो, मुस्कराओ इस उम्मीद पे जियो
हम बिछुड़े हैं अगर आज तो फ़कत कल मिलने के लिए

वतन से जाते हो तो जाओ, खुशनसीब रहो
तुम जहां भी रहो हरेक़ के बनके हबीब रहो
सिसकता दिल, बरसती निगाहें करती हैं दुआएं
नज़रों से चाहे दूर, मगर दिल के करीब रहो

1. सौन्दर्य से पूर्ण खिला फूल 2. विदाई की बेला

हिन्द का हर ज़र्रा महका हुआ गुलशन है
अमन का हामी यहां हर अहले-वतन है
कमाले-फ़न[1] से तेरे उनपे यह ज़ाहिर[2] हो
हिन्द का हर लाल रुहे-चमन[3], फखे-वतन[4] है

वादिये-कश्मीर, गंगो-जमन के किनारों की कसम
इस ख़ाके-वतन के दिलनशीं[5] नज़ारों की कसम
चमने-वतन की बहारां बन तुम लौट के आना
जाने वाले! तुझको ज़िन्दगी की बहारों की कसम

1. अनोखा हुनर 2. प्रगट 3. चमन की आत्मा 4. देश का गौरव 5.मनको लुभाने वाले

यूं जमने को तो हर महफ़िल जम जाती है
पर जब वो आते हैं तब रंग पे आती है
झूमता आता है मेहरबानों का जमघट
निगाहे-करम[1] बनके खुशी छलक जाती है

ज़िन्दगी कभी कभी किसी के काम आती है
बन्दगी कभी कभी खुशी का पयाम लाती है
उठा उठा के हाथ जब मांगते हैं दुआएं
ज़हे-किस्मत नसीबों वाली ये शाम आती है

1. कृपा दृष्टि

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 77

आप से दूर हैं मगर आपके पास हैं हम
बेबस, मायूस, आपकी तरह उदास हैं हम
इंसां हैं, लाचार हैं, ये उसकी रज़ा है
साथ पले हर हाल में आपके साथ हैं हम

ग़ैरों के शिक़वों को पल भर में मिटा देते थे
नादां को दानां[2] की तरह समझा लेते थे
उस मेहरबां का खत न कोई प्याम आता है
जो गल्तियों का मुस्कराहट से सिला[3] देते थे

१. निराश २. ज्ञानी ३. उत्तर

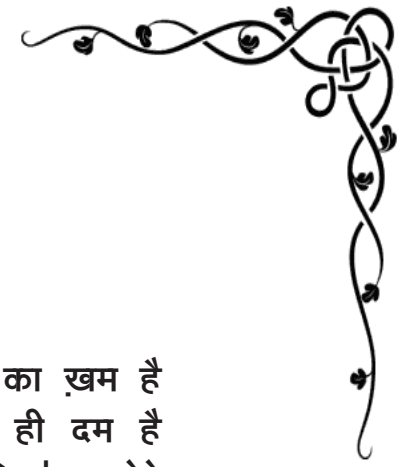

खुदग़र्ज़ी उनकी ज़ुल्फों का ख़म है
कहने को मेरे दम से ही दम है
हक़ीक़त तो ये है ए दिल! न मेरे
जीने की परवाह न मरने का ग़म है

गुज़रे हुए लम्हों की हक़ीक़त का एहसास है मुझको
ख़ामोश हूं मैं फर्ज़ की एहमियत का अंदाज़ है मुझको
खुश रहो, याद दिलाने वालो! मैं यह सोच के जीता हूं
ग़ैर मुझे ग़ैर न समझे, अपनों का भी पास है मुझको

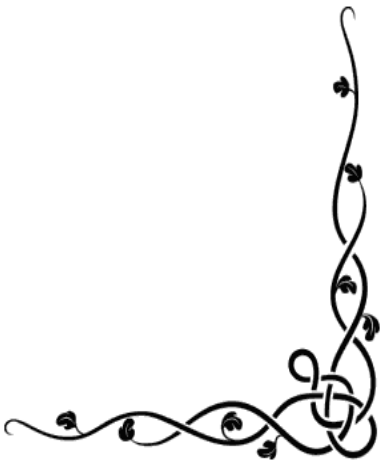

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 79

वतन

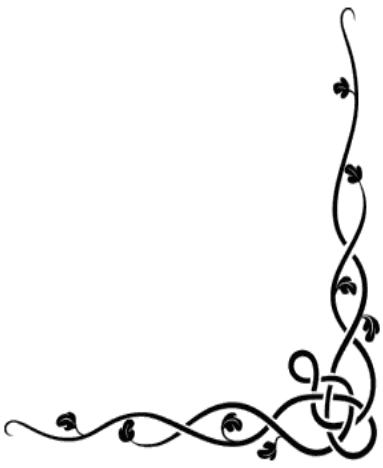

ताजमहल

बारहा तेरी यादों से दिल का साज़ बजाया है
वफ़ा के दामन में तेरी जफ़ा का राज़ छुपाया है
बदली निगाहों और तेरे तेवर ने सब तोड़ दिया
हम ने जब भी ख़्यालों में कभी ताज बनाया है

ताज हक़ीक़त है मगर अफ़साना सा लगता है
मुहब्बत का यह मन्दिर है, मयख़ाना सा लगता है
जो भी आता है, जामे-वफ़ा पी, दो रुहों से मिल
इसकी दीवानी फिज़ा में दीवाना सा लगता है

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 81

ये जमना का किनारा है, और मुहब्बत की ज़मीं है
यहां का हर ज़र्रा वफ़ा है, जिसकी दुनिया में कमी है
ये ठंडी हवा और जमना का पानी कुछ और नहीं
हिज्र में रोते हुए बादशाह[1] के अश्कों की नमी है

1. मुगल बादशाह शाहजहां जिसने अपनी बेगम मुमताज़ महल की याद में ताज महल बनवाया

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 82

जवाहर लाल नेहरु[1]
14 नवंबर 1964

जवानी का आगाज़ लिये तू फिर से चला आ
इन्सां का ख़्याल लिये तू फिर से चला आ
मेरा ही नहीं ये अहले-वतन का तकाज़ा है
अचकन में गुलाब लिये तू फिर से चला आ

1. उनका ज़न्म 14 नवंबर, 1889 में हुआ और मृत्यु 27 मई, 1964 को हुई। 14 नवंबर, 1964, नेहरु जी का मृत्यु के बाद उनका पहला जन्मदिन था।

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 83

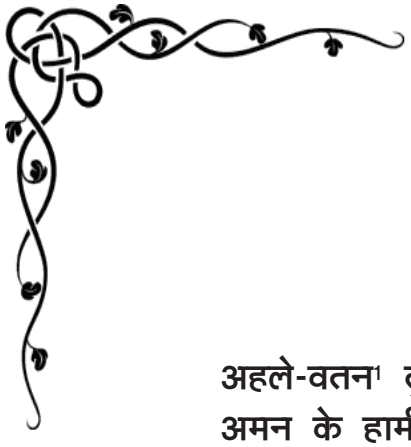
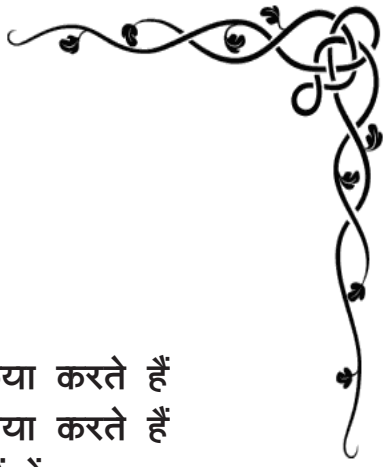

अहले-वतन[1] तुझको याद किया करते हैं
अमन के हामी तेरा नाम लिया करते हैं
जंग के दुश्मन! महजबीं[2] ज़मीं में उतर आ
ज़मीं वाले यही फ़रियाद किया करते हैं

नुमाईश है गुलों की हर तरफ चमन में
सो चुके हैं हज़ारों खिज़ा के कफ़न में
मौजे-बहारां ! तुझसे गुज़ारिश है फिर से
पैदा कर दे वो गुलाब दुनिया के चमन में

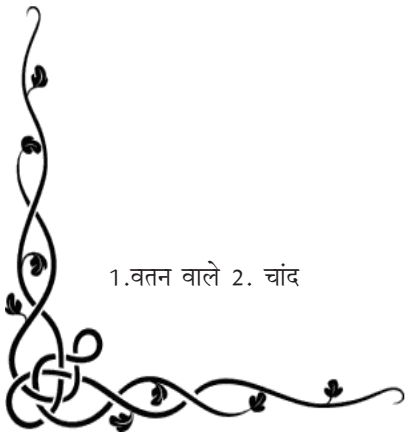
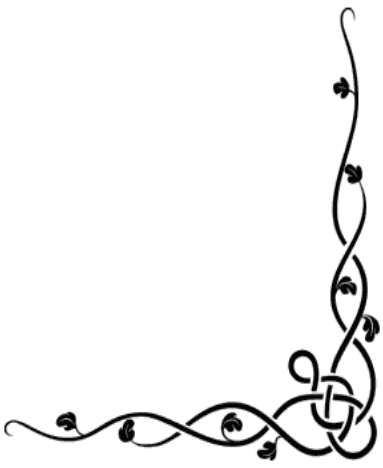

1.वतन वाले 2. चांद

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 84

लाल बहादुर शास्त्री जी के निधन पर

कर रही है याद उसे हर सदा[1] अजान की
बना गया जो हर डगर मस्जिदें ईमान की
मुसीबतों से जूझ के बुलन्दियों को चूम के
बन गया है आज वो मंज़िलें इन्सान की

रह गईं हैं गर्दिशें कारवां चला गया
रो रहा है आज हिन्द, पासवां[2] चला गया
मंज़िले-सुकून[3] पा वो उठ गया जहान से
जैसे सर ज़मीन से आसमां चला गया

1. आवाज़ 2. ख्याल रखने वाला 3. चैन की मंजिल

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 85

नौजवानों के चेहरों पे अब जलाल नहीं
वतन को रख के गिरवी जिन्हें मलाल नहीं
पांव हैं क़ब्र में मगर कुर्सी पे बैठे हैं
बेकार जवानी का जिन्हें ख़्याल नहीं

अस्मते-वतन[1] को कुरबानी की ज़रुरत है
उठे हुए कदमों को रवानी की ज़रुरत है
अहले-वतन ये गर्दिशे-दौरां का तकाज़ा है
कुर्सियों पे बुढ़ापे की नहीं जवानी की ज़रुरत है

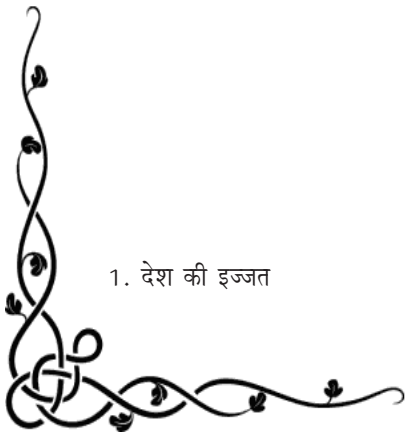
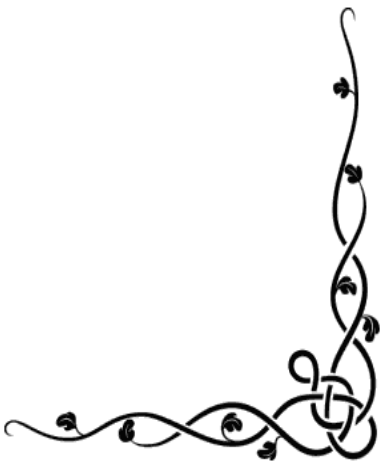

1. देश की इज्जत

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 86

पैसे के सब हैं गरीबी का कोई हबीब नहीं
ढूंढे से यहां मिलता कोई खुशनसीब नहीं
हमें दूध की नदियों के ख्वाब दिखाने वालो!
तुम्हारी रहनुमाई[1] में पानी भी नसीब नहीं

1. नेतृत्व

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 87

1962 चीनी आक्रमण

ए चीन ! तेरे हरेक़ चमन को वीरानों में बदल देंगे
तेरे हर गुल को खिलने से पहले ही मसल देंगे
बेशर्म! न खुद ही खुश रहे न औरों को ही रहने दे
ऐसा इन्सां गर खुद न जिए तो हम जीने भी न देंगे

हिमालय की ज़मीं पे शबनम नहीं खूं का नजारा है
आज़ादी के दीवानों को मिट जाने का इशारा है
गद्दारों की ख़ातिर कफ़न ले उठो ऐ मेरे वतन वालो
जुल्मे-स्याही[1] में शम-ए-शहादत[2] ने शहीदों को पुकारा है

1. अत्याचारों का अंधेरा 2. बलिदान की लौ

वतन की खातिर मरने को बेक़रार हैं हम
गरदने-दुश्मन के लिए तलवार हैं हम
ए जंगबाज़! अपने लड़खड़ाते कदमों को रोक
ज़मीने-वतन पे सुलगते हुए शरार हैं हम

वतन का ज़र्रा ज़र्रा शहादत की शमां है
इस शमां का परवाना सारा हिन्दोस्तां है
कुर्बानी के नशे में जवानी की क्या कहूं
इश्क़े-आज़ादी[1] में तिफ्ली[2] और पीरी[3] भी जवां है

1. स्वतन्त्रता प्रेम 2. बचपन 3. बुढ़ापा

आई है रवानी लिए पैगामे-चमन
सय्यादे-सितम से रो रही है रुहे-चमन
हर गुल बन के एटम मिटा दे चीनी-चमन
यही है बुलबुल का और यही पैगामे-चमन

आई है जवानी लिये पैगामे-वतन
उड़ रही ख़ाक हो रहा हंगामे-वतन
मिट जाओ मगर मिटा दो गद्दारों-हैवां
यही है मेरा और यही पैगामे-वतन

आतिशे-बगावत[1] हवाए-ज़ुल्म[2] से कभी बुझ नहीं सकती
तमन्नाए-शहादत[3] तख्ते-फांसी[4] से कभी मिट नहीं सकती
टैक्सों के शिकंजों में वतन का गला घोटने वालो!
सदाए-खलक़त[5] जौरे-कानून[6] से कभी रुक नहीं सकती

ज़खीरा-ए-ज़ब्त सुलगता इंकलाब[7] होता है
हर सांस में निहां मौत का असबाब[8] होता है
बेबसी में सिसकते हुए मासूम का हर आंसू
सफ़ीना-ए-सितम[9] के लिए एक सैलाब[10] होता है

1. विद्रोह की चिंगारी 2. अत्याचार की आंधी 3. बलिदान होने की इच्छा
4.फांसी का तख्ता 5. जनता की आवाज़ 6. कानून के दबाव से 7. क्रान्ति
8. सामान 9. अत्याचार की नाव 10. तूफान

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 91

आज़ादी

बूढ़ी भारत मां की ए कमसिन बेटी ! पाक़ दामन में न दाग लगाना
रुस के वायदों में न आना, अमरीकी डालर पे न निगाहें बिछाना
पैंतालीस करोड़ की तू इक़ बेटी तुझको क्या गम है
तेरी अस्मतो-आबरु के लिए हरेक़ जवां है शहादत का दीवाना

गर कोई रखे तुझपे हैवानी नज़र तो हम सह न सकेंगे
तुझको मिटाने वाले खुद मिट जायेंगे ज़िन्दा रह न सकेंगे
तेरी मोहब्बत में हम बेख़ौफ़[1] ज़िन्दगानी लुटा देंगे
अमन के दुश्मन तुझसे निगाहें मिला न सकेंगे

1. निडर

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 92

सन् 1965 - पाकिस्तानी आक्रमण

दोस्त की मानिन्द आओगे तो इस्ते-इक़बाल[1] करेंगे
अमन से अमन की ख़ातिर बैठ के सवालो-जवाब[2] करेंगे
गर सरहद पे तुमने गीदड़ की तरह घुसने की कोशिश की
तो याद रहे! हम ईद के बकरे की तरह हलाल करेंगे

मिट जायेंगे वतन की आबरु के लिए उफ़ न करेंगे
मिट जाये गर सारा जहां इसके लिए आह न भरेंगे
अहद[3] करके उठे हैं जवां अब न चैन से बैठेंगे
न नींद ही आयेगी जब तलक दुश्मन को तबाह न करेंगे

1. स्वागत 2. प्रश्न और उत्तर 3. प्रण

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 93

अब अपने कदमों में बरबादी की ज़ंजीर देखोगे
हिन्दोस्तां में मिले हुए पाक की तस्वीर देखोगे
जागे हुए शेर इस कदर परेशान करेंगे ए गीदड़!
अब न नींद ही आयेगी, न ख्वाबे-कश्मीर[1] देखोगे

1. कश्मीर का सपना

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 94

ज़िन्दगी के जाम में उठते गुबार

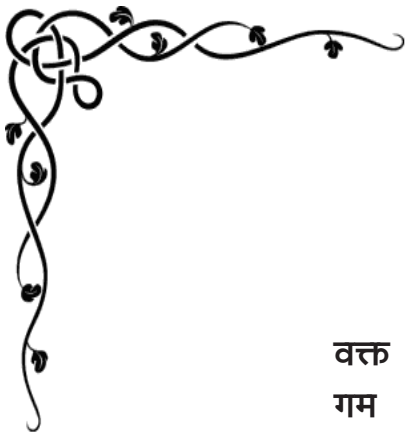
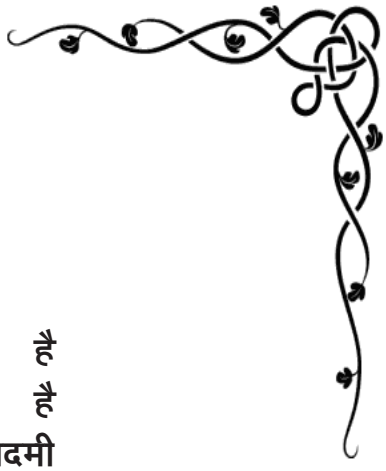

वक्त ज़ख्म सीता है
गम लहू पीता है
तड़प तड़प के आदमी
मौत के लिए जीता है

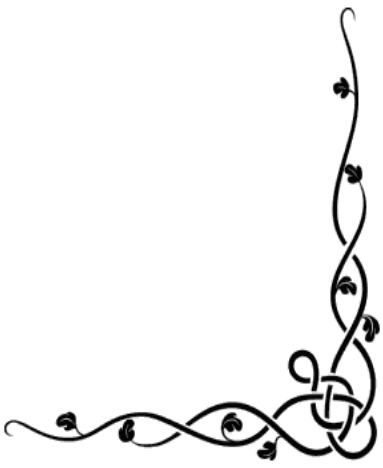

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 96

इक़ तरफ हक़ीक़त है, इक़ तरफ फ़साना है
इस तरफ़ है तन्हाई तो उस तरफ़ ज़माना है
हर कदम पे गर मिलती हैं ठोकरें, तो मिलें
ज़िन्दगी का मक़सद ऊसूलों को आज़माना है

ऊसूल टकराते हैं, जज़बात तड़पाते हैं
घबरा के जो रुक जाएं, घुट घुट के मर जाते हैं
राहे-ज़ीस्त में बस मंज़िलें मिलती हैं उन्हें
जो किनारों को तोड़ सैलाब[1] से बढ़ जाते हैं

1. बाढ़

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 97

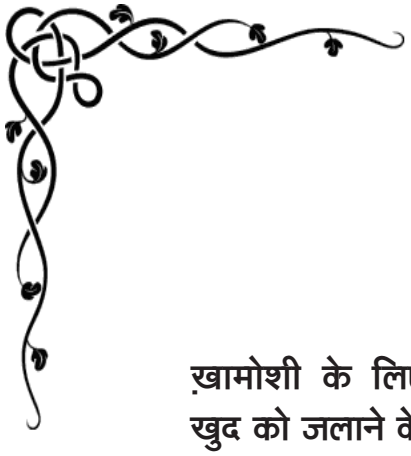

ख़ामोशी के लिए इन्सां ने श्मशान बनाया है
खुद को जलाने के लिए दिल ने अरमान बनाया है
अपने दर्दो-अलम ख़ामोश जलन में हम भूल गए
औरों की लिए खुदा ने हमें इन्सान बनाया है

गर किसी का साथ नहीं तो कोई बात नहीं
यारों की बारात नहीं तो कोई बात नहीं
गरज़[1] के जहन्नुम[2] में खो जाएगी यह दुनिया
गर इंसां के दिल में इंसां के लिए जज़बात[3] नहीं

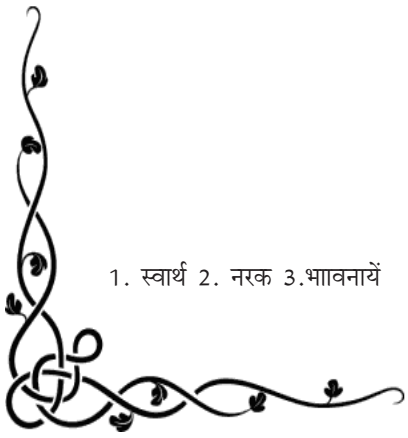
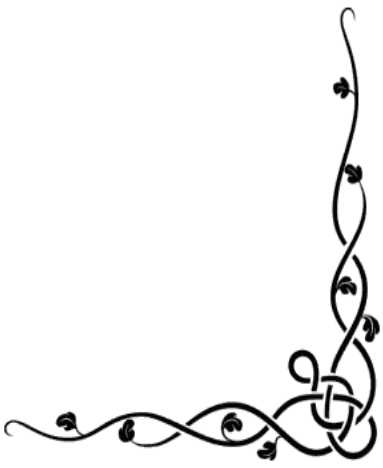

1. स्वार्थ 2. नरक 3.भाावनायें

मैं ज़मीं हूं वो आसमां हैं ये वक्त की बात है
मैं परेशां हूं वो शादमां[1] हैं ये वक्त की बात है
जामे-इल्ज़ाम[2] पी ख़ामोश रह, किसी से कुछ न कह
वक्त रुकता नहीं, बदलेगा रंग, बस वक्त की बात है

छोटी सी ज़िन्दगी में लाख रंग देखे हैं
इतनी बड़ी दुनिया में दिल तंग देखे हैं
इन्सां वही, बातें वही, पर दिल जानता हैं
सीधी सी बात के क्या क्या ढंग देखे हैं

1. प्रसन्न 2. दोषों से भरा प्याला

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 99

तूफां में डूबने वालों को साहिल से इशारा देते हैं
आंखों को आंसू और अन्धों को नज़ारा देते हैं
खुदगरज़ी के आलम में अजब है यह दस्तूरे-ज़माना[1]
ज़िन्दगी को ठोकरें और लाशों को सहारा देते हैं

ईमां को गुरबत[2] के करीब देखा है
गुमां को तुरबत[3] के करीब देखा है
गिन सकता हूं वो लम्हें ज़िन्दगी के, जब
इंसां को इन्सां के करीब देखा है

1. दुनिया की रीत 2. गरीबी 3. कब्र

अपनों की तस्वीरें अदब की ज़ंजीरें बन जाती हैं
दर दर की ठोकरें सबक की लकीरें बन जाती हैं
जज़बात अगर सर उठाके ऊसूलों के साथ चलें
तो हिम्मत के हाथों बिगड़ती तक़दीरें बन जाती हैं

ज़ख्मी तन्हाई दर्द भरा राग बन गई
इन्तिहा-ए-ज़ब्त[1] सुलग सुलग के आग बन गई
आतिशे-हिम्मत[2] ने जलाई जब उम्मीद की लाशें
तो ज़िन्दगी राहे-इन्सां पे चिराग बन गई

1. असीम सहनशीलता 2. हिम्मत की चिंगारी

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 101

ये इब्तिदा[1] से जवानी तलक़ चढ़ती है
और जवानी से इन्तिहा[2] तलक़ ढलती है
ज़िन्दगी नाम है इस रह-गुज़र का जो कभी
फ़रेब खाके तो कभी देके चलती है

मैं राह को राह कहूं या गर्द कहूं
सांस को सांस कहूं कि आहे-सर्द[3] कहूं
परेशां[4] हूं इस कशमकश में ए ज़ीस्त!
कि तुझे ज़िन्दगी कहूं या दर्द कहूं

1. आरंभ 2 अंत 3.ठंडी आहें 4 दुःखी

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 102

ऊसूलों की राह पे नई घाटियों का आगाज़ हुआ है
मेरे न छूने से चमन का हर गुल नाराज़ हुआ है
ए गुलबदन! हम ख़ार सही, खुश हैं मगर, गर तुझको नहीं
गुलचीं को हमारी अहमियत का अन्दाज़ हुआ है

दुश्मन ही हमें बचने की राह दिखाते हैं
अंगार ही हैं जो राह के दीए जलाते हैं
ख़ारों को निगाहे-नफ़रत से न देख ए गुल !
यही हैं जो नापाक[1] इरादों से बचाते हैं

1. अपवित्र

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 103

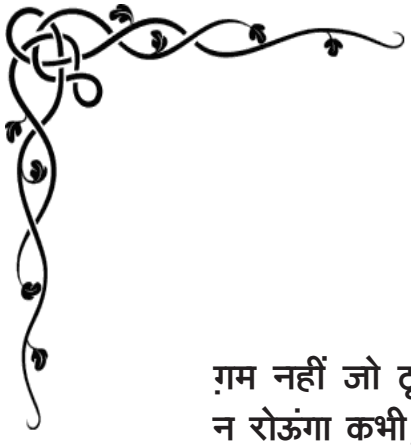
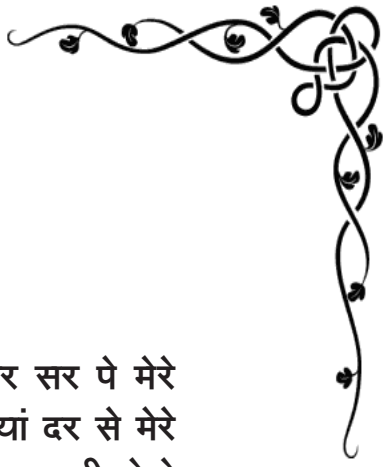

ग़म नहीं जो टूटे कहर पे कहर सर पे मेरे
न रोऊंगा कभी, जाएं जो खुशियां दर से मेरे
ए रहमते-तमाम[1]! बस इतनी सी तजल्ली[2] दे दे
ना-उम्मीद न जाए बा-उम्मीद जो आए दर पे मेरे

किनारा किनारे के कभी करीब न होगा
दर्दो-ग़म का मुझसा कोई हबीब[3] न होगा
जला देंगे लाश मेरी मुझको सताने वाले
हिन्दू हूं मरके सोना भी नसीब न होगा

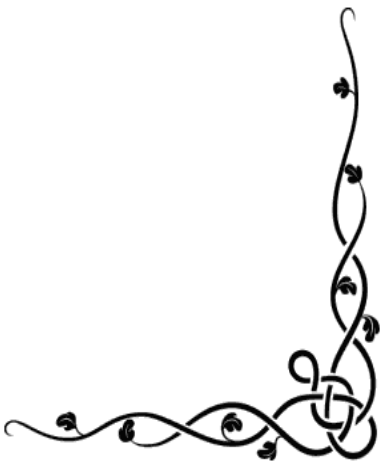

1. भगवान 2. जल्वा 3.मित्र

ए खुदा ! तेरी खुदाई का हमें एतबार नहीं होता
दुनिया में तेरे करमों का हमें दीदार नहीं होता
खुशियों के लुटेरे हैं ग़म की दुकान लगाने वाले
भूले से भी कोई ग़म का खरीददार नहीं होता

ग़म की सहर में उम्मीद के तारों का जनाज़ा उठने को है
बे-उम्मीद, मौत के दर से सांसों का तकाज़ा उठने को है
अपने दा़मन में खिज़ा को छुपा मेरा चमन लूटने वालो !
दम भर में यकीं[1] के कफ़न में चिरागे-फ़रेबां[2] बुझने को है

1. विश्वास 2. धोखे का चिराग

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 105

बेखुदी मसला है जिसका कोई भी हल नहीं
ग़म वो क़श्ती है जिसका कोई भी साहिल नहीं
खुशी के नशे में झूम के जियो ए जीने वालो
ये ज़िन्दगी आज है, अब है, शायद कल नहीं

दामने-पस्ती[1] में इक़ जीत भी शामिल है
हर जीने वाला मर जाने के क़ाबिल है
नाखुदा-ए-क़श्ती-ए-ज़ीस्त[2], तूफां से न डर
मौत क्या है भला? ज़िन्दगी का साहिल है

1. घर का आंचल 2. जीवन की नाव को खेने वाले

अदना सा इन्सान हूं, तंग-दिल नहीं हूं
वीरां हूं मगर बेवफ़ा महफ़िल नहीं हूं
मेरे दामन में मौजों से खेलने वालो!
महज़ क़श्ती हूं, क़श्ती-ए-साहिल नहीं हूं

मैं वो राह चला हूं, जिसका कोई छोर नहीं है
और हिम्मत के सिवा मेरा कोई और नहीं है
खा खा के ठोकरें बेसबब भटकता ही रहूंगा
गर्द हूं कारवां की जिसका कोई ठौर नहीं है

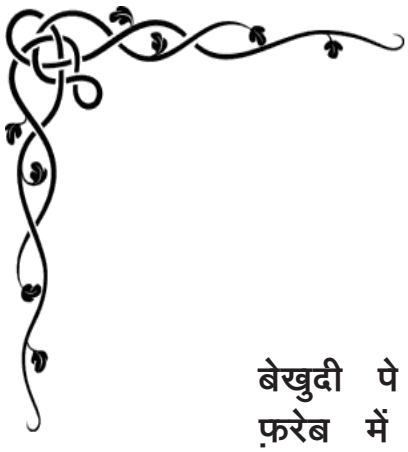

बेखुदी पे भी इल्ज़ाम आता है
फ़रेब में ईमान चला जाता है
इंसानियत भी संवर जाती है, जब
इन्सान इन्सान के काम आता है

ग़म को गले लगा, खुशियां लुटा के चल
रो ले खुद मगर दुनिया हंसा के चल
गर्दिशों के साए हैं तो खुदाया ग़म न कर
हिम्मत के साथ मेरे कदम मिला के चल

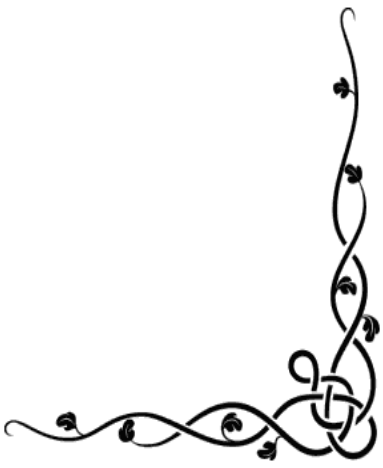

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 108

उम्मीद की बस्ती बसने को तो बस जाती है
हवस की महफ़िल सजने को तो सज जाती है
हयाते-कफ़स[1] में सांसें कसक बन चुभ जाती हैं
जब गुलों की हंसी खिज़ा के सांचे में ढल जाती है

आज कोई भी किसी का मददगार नहीं है
हर सू खिज़ा ही खिज़ा है कहीं बहार नहीं है
जौरो-सितम ले सुर्खरु सैय्याद हैं यारो
दर्दे-बुलबुल का कोई गुले-बहार नहीं है

१. जीवन की कैद

वक्त पे दुश्मन भी मेहरबान नज़र आते हैं
ग़मे-खिज़ा[1] में चमने-यार[2] वीरान नज़र आते हैं
अदब के मालिक, मां बहिनों की अस्मत[3] के लुटेरे
पोशाके-इन्सां में मुझे हैवान नज़र आते हैं

हम तन्हा होते हैं तो तिश्ना-ए-काम[4] होते हैं
लबों पे ऊसूल ले जश्ना-ए-आम होते हैं
बदनाम हैं नंगे इन्सां नाहक़, सच पूछो तो
सफ़ेद पोशी में ही छिपे इल्ज़ाम होते हैं

1. पतझड़ का दुःख 2. मित्रों से भरपूर चमन 3. इज्जत 4. वासना से लीन

साहिल से मिलने के लिए हर लहर मचलती है
उसके ही इशारे पे हर तक़दीर बदलती है
चाहत के दरिया में तूफ़ान से क्या शिक़वा
उम्मीद की हर क़श्ती साहिल पे भटकती है

गुनाहों पे कदम चलते नहीं, चलाए जाते हैं
भुलाने की कशमकश में अक्सर याद आते हैं
दामन में खिज़ा लेके न घूमो ए चमन वालो!
हसरते-बुलबुल में सय्याद भी तड़पाए जाते हैं

मय नहीं छूटती, सरुर छूट जाता है
किस्मत नहीं रुठती, इंसां रुठ जाता है
औरों से नहीं तो खुद से ही सबक़ ले ले
गरुर नहीं टूटता, तो इन्सां टूट जाता है

जो लाशों को कफ़न दें वो अपने हैं
बहका कर जो बहलाएं वो सपने हैं
सबसे बेहतर है रुहानी आलम, जहां
न ग़ैर है कोई न अपने ही अपने हैं

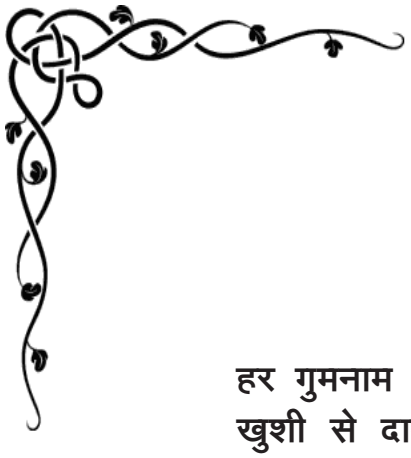

हर गुमनाम हसरत को बदनाम कर दूंगा
खुशी से दामन फैला इल्ज़ाम भर लूंगा
बेखुदी में जिया हूं मैं सिर्फ़ औरों के लिए
अब खुद के लिए ये ज़िन्दगी तमाम कर लूंगा

हर ख़्वाब ने कहा मचल, मज़ा सितारों में है
गम ने कहा तड़प, प्यार ग़म के मारों में है
ज़िन्दगी डूबती है, उतराती है, दिल की तरह
मौत ने कहा चल, तेरा घर मज़ारों में है

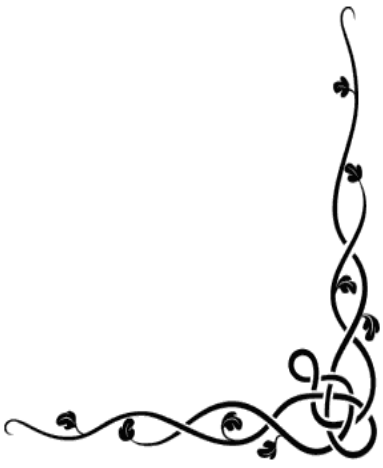

ज़िन्दा रहते कोई न जाने
मौत के बाद सब पहचाने
कोई क्या बतलायेगा, हम
अपना नसीबा खुद ही जाने

क्या लेके आए थे? क्या लेके जाएंगे ? जब जाएंगे
कोई हंसेगा कहीं तो किसी को रुला के जाएंगे
हम जीए हैं, जीएंगे जब तलक़ तो सिर्फ़ औरों के लिए
हमारी याद आएगी, गए वक्त की मानिंद हम न आएंगे

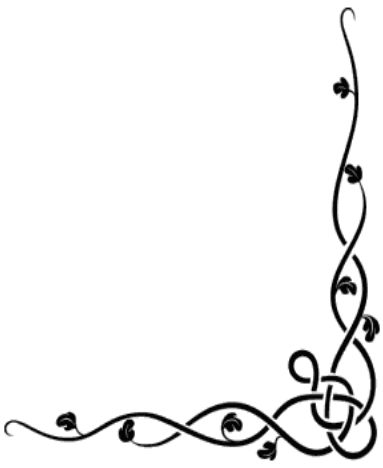

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 114

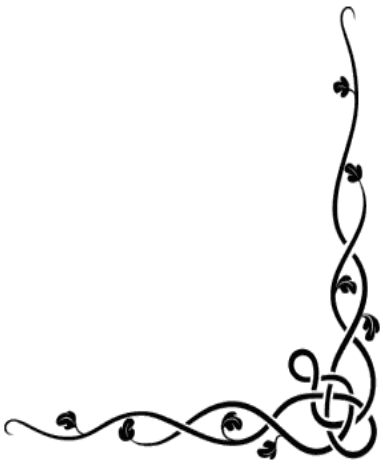

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 115

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 116

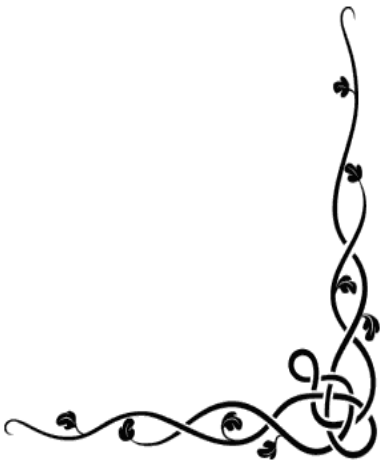

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 117

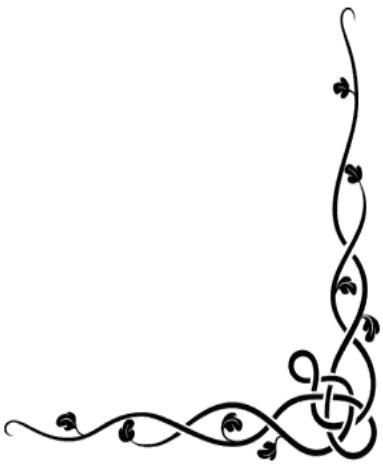

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 118

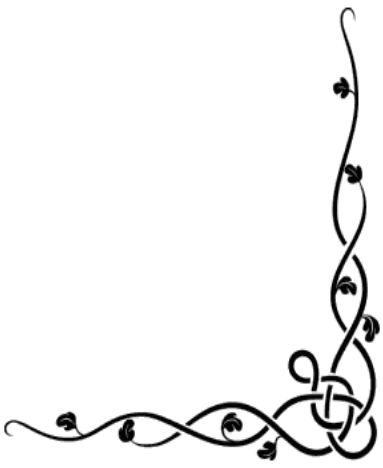

Gataeayn.upd-3June2015_Layout 1 6/1/2004 12:06 AM Page 119